पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

पूज्यपाद गुरुदेव का जन्म लगते असौज तीज सन् 1942 में ग्राम खुर्रमपुर-सलेमाबाद, जनपद गाजियाबाद (पहले मेरठ) उत्तर प्रदेश में हुआ था। इनके पिताजी का नाम श्री नानक चन्द और माता जी का नाम श्रीमती सोना देवी था। लगभग दो मास की अवस्था में श्वासन में लेटने से ही कुछ समय के उपरान्त शिशु की गर्दन दोनों ओर हिलने लगी और होठ फड़फड़ाने लगे। इस क्रिया की पुनरावृत्ति होने पर अज्ञानतावश उपचार प्रारम्भ हो गया। परन्तु उस विशेष अवस्था में जाने की घटनाएँ बढ़ती रहीं और आयु बढ़ने के साथ-साथ मन्त्र-पाठ और प्रवचन स्पष्ट सुनाई देने लगा। छः वर्ष की आयु में इन्हें भयानक चेचक निकली जो इनके मुख-मण्डल पर अपनी स्मृति छोड़ गई।

सात वर्ष की अल्पायु में ही इनके पिताश्री ने अपने गाँव में ही पशुओं व कृषि के कार्य के लिए नौकर रख दिया। धीरे-धीरे इनके प्रवचनों की क्रिया को मनोरंजन व कौतुक का साधन बनाया जाने लगा। एक दिवस प्रवचन की प्रक्रिया के पश्चात् अत्याधिक पिटाई के कारण लगभग 15 वर्ष की अवस्था में भीषण परिस्थितियों में मध्य रात्रि में गृह को त्यागकर विचरण करते हुए अपनी कर्मभूमि बरनावा जा पहुँचे वहाँ पर आप योग मुद्रा में समाधिस्थ होकर प्रवचन करने लगे, जिसकी सुगन्धी आस-पास में तीव्रता से फैल गई। आपने अपने प्रवचनों के माध्यम से वेद ब्रह्म पारायण यज्ञों का आयोजन करना शुरु कर दिया। जन-समूह के अथाह प्रेम व सहयोग से बरनावा लाक्षागृह पर पाँच यज्ञशालाएँ, महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, आश्रम व गऊशाला की स्थापना की, जिसका प्रबन्ध उनके द्वारा स्थापित श्री गाँधी धाम समिति की देखरेख में होता है।

पूज्यपाद गुरुदेव 28 दिसम्बर 1961 में पहली बार दिल्ली प्रवचन के लिए आए। अथाह ज्ञान के भण्डार, आध्यात्मिक जगत की महान् व अद्‌भुत विभूति के प्रवचन सुनने के पश्चात् प्रवचनों को टेप करने का निर्णय लिया गया और कुछ समय के उपरान्त प्रवचनों को टेप करके प्रकाशित करने के लिए पूज्यपाद गुरुदेव की संरक्षकता में वैदिक अनुसन्धान समिति का दिल्ली में गठन हो गया। जन्म जन्मान्तरों के शृङ्गी ऋषि की पुण्य आत्मा ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज इस अज्ञानता के युग में वैदिक संस्कृति का पुनः से उत्थान करने के लिए जीवनपर्यन्त लगे रहे। ऋषि-मुनियों ने अनुसन्धान के द्वारा भौतिक व आध्यात्मिक विज्ञान को अपने जीवन में कितना साकार किया है उसकी अथाह चरमसीमा इनके प्रवचनों में स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। इस अथाह ज्ञान को मानवता के लिए आचरण व व्यवहार में लाने का सरल व श्रेष्ठ मार्ग प्रदर्शित किया है और साहित्य की गुत्थियाँ स्पष्ट की हैं। जिससे मानव अपना व जनसाधारण का कल्याण करते हुए इस भव सागर से पार हो सकता है।

यह दिव्य आत्मा 15 अक्टूबर 1992 को पचास वर्ष की अवस्था में ब्रह्ममूहुर्त के समय अपने लोकों को गमन कर गई। **–वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

हे परमदेव! तू कल्याण करने वाला है। तू हमारा ही नहीं संसार का कल्याण करने वाला है। आज संसार में प्रत्येक मानव, प्रत्येक देव कन्या के हृदय में उस उज्ज्वलता को दे जो आपने सृष्टि के प्रारम्भ में प्रत्येक वेद मन्त्र द्वारा हमें प्रेरणा दी है। उस प्रेरणा को पुनः से जागृत कर। विधाता! आपने सृष्टि का निर्माण किया और सर्वप्रथम मानव के लिए ज्ञान का स्रोत दिया, उस आनन्द के स्रोत को आज भी दे। किसको दे? महान् पात्रों को दे। आज हमारे हृदय को पवित्र बना, जिससे हम संसार में उज्ज्वल बनें। विधाता! जब आपकी कृपा होगी तो हम आपकी दया के पात्र बनेंगे। हे भगवन्! तू दया कर और इतनी दया कर कि हमारी आत्मा के द्वारा कोई दोष न आए। विधाता! जब हमारी आत्मा के द्वारा नाना प्रकार के दोष आ जाएँगे, तो हमारा जीवन, जीवन न रहेगा। प्रभु! दया कर।

हे प्रभु! हम कैसे अभागे हैं संसार में। मैं तो भगवन्! वह कर्म करना चाहता हूँ जिस कर्म को करके प्रभु! मैं तुम्हारी गोद में आ जाऊँ। भगवन्! मैंने आज से पूर्व काल में जो पाप किया है उसे क्षमा करो। आज मैं क्षमा चाहता हूँ। प्रभु! तू आज मुझे अपना और अपनाकर अपनी गोद में ले।

हे भगवन्! तू यज्ञ को देने वाला है, प्रेरणा देने वाला है। भगवन्! वह प्रेरणा दो, जिससे हम अपना और इस संसार का कल्याण कर सकें। जब विधाता की दया होती है तो हमारी आन्तरिक भावना उज्ज्वल और पवित्र हो जाती हैं।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 590 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 665
वर्ष : 50 44 समग्र वर्ष : 57

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. याग द्वारा मृत्यु से उपराम	पूज्यपाद-गुरुदेव	5-17
4. नम्रता ही जीवन	पूज्यपाद-गुरुदेव	18-32
5. यज्ञ से आत्म-ज्ञान	पूज्यपाद-गुरुदेव	33-35
6. ऋषियों के उद्‌गार		36
7. दान, पुस्तकों की सूची व पुस्तक प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		37-42

पूज्यपाद गुरुदेव का जन्मोत्सव

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज, आदि गुरु ब्रह्मा जी के परमप्रिय एवम् ज्येष्ठ शिष्य के 80वें जन्मोत्सव की पावन वेला के शुभागमन पर दिनाँक 12 सितम्बर से 13 सितम्बर 2022 तक गुरुदेव की कर्मभूमि एवम् निर्माणीत यज्ञीय स्थली लाक्षागृह वारणावत में श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय के प्राङ्गण में गाँधी धाम समिति (पञ्जी.) के द्वारा सामवेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ का आयोजन प्रति वर्ष की भाँति बड़े हर्षोल्लास के साथ आयोजित किया जा रहा है।

अतः आप सभी से नम्र निवेदन है कि योगनिष्ठ गुरुदेव द्वारा पुनः से प्रज्वलित इस यज्ञ ज्योति को निरन्तर ऊर्ध्वा में ले जाने के लिए आप अपने परिवार, सगे-सम्बन्धियों एवम् मित्रों सहित भाग लेकर आहुति प्रदान करके पुण्य के भागी बनें। **गाँधी धाम समिति (पञ्जी.)**

आप सभी को रक्षा बन्धन एवम् कृष्ण जन्माष्टमी की हार्दिक शुभकामनायें।

॥ ओ३म् ॥

याग द्वारा मृत्यु से उपराम

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस मेरे प्यारे! देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वह परमपिता परमात्मा महिमावादी हैं। उसी की महिमा सर्वत्र ब्रह्माण्ड में ओत-प्रोत है वह अनन्तमयी माना गया है। जितना भी यह जड़-जगत अथवा चैतन्य-जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वो मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है। क्योंकि उस परमपिता परमात्मा की महती अथवा उसके गुणों का गुणवादन और उसकी महानता का वर्णन, प्रत्येक वेद मन्त्रः मानो उसका वर्णन करता रहता है। क्योंकि प्रत्येक शब्द में उस महान् मेरे देव की महती अथवा उसकी रचना का वर्णन है। हमारे आचार्यों ने परम्परागतों से ही बेटा! उसके ऊपर बहुत अनुसन्धान किया क्योंकि मानव का यह स्वभाव है क्या वह अपने से ऊर्ध्वा में जाना चाहता है और उसके मनो की यह मनोनीतता कहलाती है कि हम उस परमपिता परमात्मा की महानता अथवा उसका वर्णन हमारे समीप आना चाहिये। तो इसीलिये प्रत्येक वेद मन्त्र क्या परम्परागतों से ही ऋषि-मुनि उसके ऊपर अपना अन्वेषण करते रहते हैं अथवा विचार-विनिमय करते रहते हैं, और विचारते रहते हैं कि वह परमपिता परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान हमारे समीप आना चाहिये। प्रत्येक मानव के हृदय में यह आकांक्षा लगती रहती है कि मेरा जो प्रभु ज्ञानमयी और विज्ञानमयी है, मानो उसको जान करके हम मृत्यु से पार हो जायें। प्रत्येक मानव के हृदय में मृत्यु की

आकांक्षा लगी रहती है और विचारता रहता है कि जितना भी यागाम् भवि वृतम् देवाः मानो जितना भी हमारा क्रियाकलाप है वह मृत्यु से अथवा अन्धकार से रहित होना चाहिये, ये प्रत्येक मानव के हृदय में आज ये विचारधारायें और वह अपने में बेटा! इसके ऊपर अन्वेषण करते रहते हैं।

ऋषि-मुनियों का मृत्यु के ऊपर चिन्तन

मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जिस काल में ऋषि-मुनि अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके और मृत्यु के ऊपर अपना चिन्तन करते रहते थे, और विचारते रहते कि हमारी मृत्यु नहीं होनी चाहिये। बेटा! अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके मनस्तत्त्व को धारण करने वाली मेरी मातायें मानो अपने में बेटा! अपने में चिन्तन व अपने जीवन को बना करके बाल्य-बालिकायें मानो उनको मृत्युञ्जय बनाने की एक उनके हृदय की एक महानता और विचित्रता उनके हृदय में सदैव नृत करती रहती थी। जब बेटा! मुझे महात्मा मलदामसम्ब्रहे वर्णास्सुतम् वाचन प्रवाहम् भवि व्रतम् देवाः जब महर्षि प्रवाहण और माता मदालसा का जीवन स्मरण आता रहता है। तो प्रायः माता ने अपने पुत्र को यह उपदेश दिया, क्या हे बालक! तू मृत्युञ्जय बन क्योंकि मृत्युञ्जय बनना ही एक मानवीयता कहलाती है।

एक यजमान याग करता है, उसके हृदय में यह आकांक्षा लगती रहती है कि मैं मृत्युञ्जय बनना चाहता हूँ और इस याग के द्वारा मैं मृत्यु से पार होना चाहता हूँ। तो मेरे प्यारे! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, जिस काल में उद्दालक गोत्र में विश्वश्रर्वा एक समय बेटा! भ्रमण करते हुये वह महर्षि वैशम्पायन ब्रीही वाचक ऋषि के द्वार पर पहुँचे। तो उनके हृदय में ये आकांक्षा लगी रही क्या मैं मृत्यु से पार होना चाहता हूँ। तो मेरे प्यारे! उन्होंने महर्षि विभाण्डक इत्यादि मुनियों से ये विवेचना प्रगट की क्या भगवन् मैं मृत्यु से पार होना चाहता हूँ और मैं याग के द्वारा मृत्यु को, मृत्यु से पार और मृत्यु को उलाङ्घना चाहता हूँ जिससे मेरा अन्धकार मानो नष्ट हो जाये। तो मेरे प्यारे! देखो, जब यह वाक्य ऋषियों ने श्रवण किया तो

उद्दालक गोत्र के ऋषि, महर्षि वैशम्पायन और रेवक ऋषि महाराज के आश्रम में विद्यमान हो गये। तो मुनिवरो! देखो, वैशम्पायन ऋषि से ये प्रश्न किया गया कि महाराज आप नाना प्रकार के यागों को जानते हैं क्योंकि हमारे वैदिक साहित्य में भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों का चलन अथवा उनका क्रियाकलाप होता रहा है, कहीं मानो देखो, अश्वमेध याग है, कहीं वाजपेयी, अग्निष्टोम यागों का वर्णन है, कहीं गौमेध, विष्णु यागों का वर्णन है, कहीं रुद्र और ब्रह्म यागों का वर्णन आता रहता है। तो मानो उन्होंने ये कहा कि प्रभु! आप बहुत प्रकार के यागों के क्रियाकलाप को जानते हैं। परन्तु यह चाहते हैं हम आपके मुखारबिन्दु से क्या मानव यागों के द्वारा मृत्यु से कैसे पार हो जाता है? ये जो भिन्न-भिन्न प्रकार के याग जैसे ब्रह्म याग है क्योंकि ब्रह्म यागी भी चाहता है कि मेरी मृत्यु नहीं, मैं ब्रह्म को प्राप्त होना चाहता हूँ।

महर्षि वैशम्पायन मुनि महाराज के उद्‌गार

मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने ये वाक्य अपनी वृत्तियों में बेटा! धारण किया तो वेद का ऋषि, वैशम्पायन ऋषि कहता है कि वेदाः अम्रताम् चित्रम् रथम् ब्रह्म वाचो सम्भवी देवाः। हे प्रभु! इस वाक्य को तो मैं आपको अच्छी प्रकार निर्णय नहीं करा सकता परन्तु वैशम्पायन ने एक वाक्य ये तो कहा था क्या वास्तव में वेद का मन्त्र तो यही कहता है यजम् भविताम् मन व्रतम् ब्रह्मे मृत्यु तो वेद का वाक्य यह कहता है क्या वास्तव में याज्ञिक की मृत्यु नहीं होनी चाहिये। अब भगवन्! इसको मैं स्पष्टीकरण नहीं कर सकता क्या मृत्यु कैसे नहीं होती, परन्तु इतना मैं जानता हूँ कि मृत्यु नहीं होती। परन्तु यह नहीं जानता कि कैसे मृत्यु नहीं होती। मेरे प्यारे! वैशम्पायन ऋषि महाराज से महर्षि विभाण्डक ने कहा कि महाराज ये ऋषिवर तो यह स्पष्टीकरण चाहते हैं। उन्होंने कहा कि महाराज! मेरे विचार में यह आता है चलो, हम विचारकों का एक समूह ऋषि-मुनियों के द्वार पर चलता है क्योंकि महर्षि गाड़ीवान रेवक ऋषि महाराज अपने आश्रम में, अपने में महान् तपस्वी

हैं जिनको एक सौ पाँच वर्ष हो गये हैं साधना करते हुये, अनुष्ठान करते हुये वे मृत्यु से पार होने के लिये उन्होंने कई अनुष्ठान किये हैं।

महर्षि गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज द्वारा याग व मृत्यु की विवेचना

मेरे प्यारे! देखो, सब ऋषिवर – महर्षि विभाण्डक, विश्वश्रर्वा, उत्केत्वर ऋषि महाराज मेरे पुत्रो! महर्षि विभाण्डक ऋषि इत्यादि मुनियों ने वहाँ से गमन किया और भ्रमण करते हुये मेरे पुत्रो! वह कजली वनों से ऊर्ध्वा में वहाँ ऋषिवर तपस्या करते थे, तो बेटा! महर्षि गाड़ीवान रेवक मुनि के द्वार पर पहुँचे। गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने अपने में हर्ष ध्वनि की क्या ये तो महान् ब्रह्मवेत्ता और ब्रह्मनिष्ठः कुछ ब्रह्मचारी हैं परन्तु उनका आगमन मेरे द्वार पर हुआ है। तो मुनिवरो! देखो, उन्होंने सब ऋषि-मुनियों की वन्दना की, आइये भगवन्! पधारिये। मेरे प्यारे! वह विराजमान हो गये, उनका अतिथि किया। अतिथि करने के पश्चात् ऋषि ने कहा कहो ऋषियों आज तुम्हारा आगमन कैसे हुआ? उन्होंने कहा प्रभु! हम इसलिये आये हैं क्या हमारे वैदिक साहित्य में, वैदिक मन्त्रार्थ में यह आया है कि याज्ञिक पुरुष मृत्यु से पार हो जाता है, तो हम भगवन्! इसलिये आये हैं क्या मृत्यु हमारे समीप नहीं आनी चाहिये, हम मृत्युञ्जय बनना चाहते हैं। प्रभु! हमारी मृत्यु नहीं आनी चाहिये ऐसी हम कामना ले करके आपके समीप आये हैं, कोई-न-कोई हमें ऐसा वाक्य हमें उद्धित कीजिये जिससे हमारा अन्तरम् ब्रह्माः सम्भवी लोकाम् हम वास्तव में उस लोक की कामना करें। तो मेरे प्यारे! देखो, सब ऋषि-मुनि विद्यमान हो गये। गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने बेटा! भिन्न-भिन्न प्रकार के वाक्यों के ऊपर अपना वक्तव्य दिया, सबसे प्रथम उन्होंने कहा क्या ये जो याग है इसको समष्टि और व्यष्टि में लाना चाहिये। मानो समष्टि कहते हैं – जो सम्भवा व्रही व्राता मानो देखो, जो सब स्थलियों में, क्या प्रत्येक क्रियाकलाप में याग को अपने को दृष्टिपात कर रहा है। एक मानव देखो समष्टि में परणित हो जाना ही मानव को याज्ञिक बनना है और मुनिवरो! देखो, उन्होंने कहा व्यष्टि में मानो व्यष्टि को समष्टि

में प्रवेश करना ही एक याग कहलाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा भगवन्! हमारा अन्तर्हृदय इससे सन्तुष्ट नहीं हुआ है। उन्होंने कहा तो प्रभु! मेरे विचार में यह है कि प्रत्येक मानव अपनी इन्द्रियों को मानो देखो, सजातीय बनाता रहे। प्रत्येक मानव देखो इन्द्रियों में हमारे में अज्ञान नहीं रहना चाहिये, वह समष्टि में परणित हो जाना चाहिये। जैसे हमारे उद्धित किये हुये शब्दः मानो अन्तरिक्ष में ओत-प्रोत हो जाते हैं और यह अन्तरिक्ष अपने में धारण कर लेता है, वायु उन्हीं चित्रों को गति देता रहता है, तो मानो देखो, एक चित्र वृत्त बन जाता है, वह एक-एक सृष्टियाँ सम्भूति बन जाता है, जिसको अपने में हम धारण करके अपने में यह अनुभव करते हैं क्या वास्तव में ये वाक्य और देखो यागाम् भविते यहाँ प्रत्येक मानव का जो क्रियाकलाप है वह याज्ञिक माना गया है।

मेरे प्यारे पुत्रो! देखो, उन्होंने इसमें भी अपने में सन्तुष्टि नहीं, मानो देखो, इतने में कहीं से भ्रमण करते हुये महर्षि प्रवाहण जी आ पहुँचे। शिलक और दालभ्य भी उसी के आङ्गन में आ पहुँचे तो शिलक और दालभ्य ने कहा क्या महाराज! आप मृत्यु के सम्बन्ध में अपना वक्तव्य क्यों नहीं दे रहे हैं? उन्होंने कहा मेरे विचार में मृत्यु जब शब्द है नहीं, तो मैं उसके विचार में दे भी क्या सकता हूँ। उन्होंने कहा तो ये शब्द वेदों में क्यों आया, क्या हम याग के द्वारा मृत्यु से पार होना चाहते हैं, मृत्यु को उलाङ्घना चाहते हैं। तो मुनिवरो! देखो, इसमें गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने पुनः से कहा क्या वेद का वाक्य तो यथार्थ है परन्तु यह जो मृत्यु शब्द है यह अन्धकार में परणित रहने वाला है, अज्ञानमय है, अज्ञान जहाँ समाप्त हो जाता है वहीं तो मानव की मृत्यु का मानो देखो, अमृत्यु में परिवर्तित हो जाता है। समष्टि और व्यष्टि में रत्त हो करके ही तो अपने जीवन को महान् बनाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, जब गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने ये कहा तो इसमें कुछ मौनता प्राप्त हो गयी। जब वह मौन हो गये, मौन हो जाने के पश्चात् मेरे प्यारे! ऋषि-मुनियों की संस्कृति नहीं रही। उन्होंने कहा तो भगवन्! अब हम यहाँ से गमन करते हैं।

महर्षि भारद्वाज मुनि के आश्रम के लिये गमन

भ्रमण करते हुये मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा कि हम महर्षि भारद्वाज मुनि के आश्रम में अपना गमन करेंगे। मेरे प्यारे! देखो, गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज की अध्यक्षता में मानो वह ऋषि-मुनियों का समाज जिसमें महर्षि प्रवाहण, महर्षि शिलक, महर्षि दालभ्य, ब्रह्मचारी व्रेतकेतु, यज्ञदत्ता, महर्षि विश्वश्रर्वा और मुनिवरो! देखो, महर्षि विभाण्डक और सोमकेतु इत्यादि ऋषि-मुनियों ने वहाँ से बेटा! गमन किया और भ्रमण करते हुये मानो देखो, वह कजली वनों में पहुँचे जहाँ गाड़ी वरणाम् ब्रह्मे वाचक प्रवाः अपनी गाड़ी को त्याग करके ऋषिवर प्रभा। मेरे पुत्रो! कजली वनों में आ करके महर्षि भारद्वाज मुनि के आश्रम में आ पहुँचे। तो गाड़ीवानम् ब्रह्मे जब गाड़ीवान को ऋषि ने दृष्टिपात किया, तो महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज, ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी रोहणीकेतु, ब्रह्मचारी यज्ञदत्ता, ब्रह्मचारिणी शबरी, महर्षि पनपेतु आदि ऋषियों ने बेटा! उन ऋषियों का स्वागत किया। महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज बड़े प्रसन्न हुये। उन्होंने कहा कि हे भगवन्! मेरा अन्तरात्मा बड़ा प्रसन्नयुक्त है, परन्तु हम यह जानना चाहते हैं भगवन्! क्या ब्रह्मे वाचक प्रव्हे लोकाम् क्या भगवन्! आज मानो आपका आगमन कैसे हुआ? जब भारद्वाज ने ये कहा कि आगमन कैसे हुआ, उन्होंने कहा कि हम तुम्हारे दर्शनार्थ और हमने श्रवण किया है क्या तुम्हारे यहाँ याग होता रहता है, हम उस याग की प्रक्रिया को दृष्टिपात करना चाहते हैं, ऐसा हमारा मनोनीत एक विचार है। जब मुनिवरो! देखो, भारद्वाज मुनि के समीप गाड़ीवान रेवक मुनि इत्यादि ऋषियों ने बेटा! यह वाक्य प्रगट किया, तो उस समय गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज से भारद्वाज ने पुनः से ये कहा कि महाराज आपको एक समय में निमन्त्रित करने के लिये पहुँचा था, जब मैंने यहाँ एक चित्रावली याग किया था। मैंने अपने पूर्वजों के चित्रों को दृष्टिपात करने का अपना एक मानो याग किया था, तो उस समय मैंने आपको निमन्त्रित किया था, आपने ये कहा था कि मैं इस समय अनुष्ठान में लगा हुआ हूँ। क्या, भगवन्! ये तो हमारा बड़ा सौभाग्य है, क्या मानो देखो,

तुम्हारे अभ्योदय ब्रह्म वाचम् ब्रह्म लोकाः हिरण्यम् व्रथाः क्या भगवन्! आज आपका आगमन हुआ तो ये मेरा कितना सौभाग्य है। आज मैं कितना अपने में हर्ष ध्वनि कर रहा हूँ। तो मेरे पुत्रो! देखो, जब ऋषि ने ये वाक्य कहा तो देखो गाड़ीवान रेवकाम् भविते शान्त हो गये। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा हे भारद्वाज! मेरी इच्छा थी कि मैं आपके इस मानो देखो, वैज्ञानिक आश्रम को दृष्टिपात करूँ। कुछ ऋषि-मुनियों का एक समूह मेरे समीप आया और उन्होंने यह कहा सम्भवा दिव्यम् गतम् ब्रह्म वाचा हिरण्यम् व्रथाः मानो देखो, हम यन्त्रशाला को दृष्टिपात करना चाहते हैं, जिस यन्त्रशाला में नाना ऋषि-मुनियों के चित्र आते रहते हैं। तो मेरे पुत्रो! देखो, जब उन्होंने ये वाक्य प्रगट किया, प्रगट करने मात्र से उन्होंने कहा तो हम तो यही जानना चाहते हैं कि याग से मानव मृत्यु को कैसे पार करता है।

याग प्रक्रिया का दर्शन

मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि ने जब ये वाक्य प्रगट किया, उन्होंने कहा कि महाराज मेरे यहाँ एक यज्ञशाला का निर्माण है, जहाँ ब्रह्मचारी नित्य प्रति याग करते हैं, हम सब याग करते हैं प्रभु! हमारे आश्रम का नियम है, क्या तो हमारे यहाँ याग की एक आभा में मन्त्रोच्चारण करो। तो मेरे प्यारे! देखो, गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज और कवन्धि इत्यादियों ने बेटा! अपनी यज्ञशाला में कवन्धि ले गये और ऋषि-मुनि मानो देखो, याग करने लगे। जब मुनिवरो! देखो, वह उसमें से कोई उद्गाता बना, कोई अध्वर्यु बना, कोई यजमान बना, कोई होता बन करके बेटा! याग का प्रारम्भ हुआ। जब याग का प्रारम्भ होने लगा, तो मेरे पुत्रो! भारद्वाज मुनि महाराज के यहाँ ऐसे-ऐसे यन्त्र विद्यमान थे, क्या जिन यन्त्रों में वह स्वाहा मानो यज्ञ में जैसे स्वाहा का उच्चारण किया तो उसी आधार पर देखो, यन्त्रों में मानो देखो, उसकी चित्रावली उन्हें दृष्टिपात होती थी। क्योंकि हमारे यहाँ यह विज्ञान यह कहता है क्या अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके शब्द गति करता है और वह वायुमण्डल में मानो देखो, प्राण वृत्तियों में रत्त हो जाता है। अन्तरिक्ष में

मानो वह ओत-प्रोत हो जाता है इसलिये यह शब्द सदैव नित्य कहलाता है। ये ऋषि भारद्वाज मुनि महाराज ने सिद्ध किया – उन्होंने कहा कि महाराज! देखो, तुम्हारा यह याग हो रहा है वह मानो देखो, शुद्ध, पवित्र जब शब्दों का, मन्त्रों का उच्चारण कर रहे थे, स्वाहा कह रहे थे तो मानो देखो, उनका चित्र बन करके द्यौ लोक में प्रवेश हो रहा था, द्यौ लोक में उनकी मानो स्थिरता ऋषियों को दृष्टिपात आने लगी। उन्होंने गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज से कहा क्या हे भगवन्! आपका यह जो चित्र है, आपकी जो मन्त्रों की एक माला बन करके मानो वह द्यौ लोक में प्रवेश कर रही है। द्यौ लोक में मानो देखो, परमाणुओं का, अणुओं का समूह रहता है भगवन्! और उसी परमाणुओं से मानो देखो, सूर्य अपना प्रकाश लेता रहता है। सूर्य मानो द्यौ से ही तो प्रकाश लेता है और द्यौ से प्रकाश ले करके वही प्रकाश मानो देखो, इस मानो पृथ्वी मण्डल पर छायामान हो जाता है। प्राणी मात्र का वही औषध बन जाता है अथवा प्रकाशक बन जाता है। तो इसीलिये हमारा वाक्य यह कह रहा है सम्भवा दिव्यम् ब्रह्मा वाचाः आओ तुम यज्ञ में ये दृष्टिपात करो। मेरे प्यारे! उनका, जैसे वह स्वाहा उच्चारण करते मानो देखो, साकल्य अग्नि में अग्नाधान करते उसी समय देखो उनका चित्र बन करके शब्दों के साथ में चित्र मेरे प्यारे! देखो, यन्त्रों में दृष्टिपात आता रहा। उन्होंने कहा धन्य है, हे भगवन्! हम यह तो जान गये कि हमारे चित्र और शब्द अन्तरिक्ष में जा रहे हैं परन्तु मृत्यु से कैसे पार होंवे हम जानना चाहते हैं।

मृत्युञ्ज्य जीवन का दिग्दर्शन

भारद्वाज मुनि महाराज ने उसमें अपना वक्तव्य प्रगट किया, उन्होंने कहा हमने एक यन्त्र का निर्माण किया। हम इस वेद मन्त्र को ले करके क्या मानव मृत्यु को कैसे पार होता है। तो मानो हमने देखो, यन्त्रशाला का निर्माण किया और एक-एक शब्द के साथ में वह जो चित्र हमारे अन्तरिक्ष में गतियाँ करते रहते हैं, वह क्रियाकलाप भी मानो इसके साथ में गति कर रहा है तो हमें मृत्यु से पार होना है। **हमारे शब्दों में मानो देखो, वेदरूपी प्रकाश होना चाहिये और वह प्रकाश मानो अन्तरिक्ष में वह अग्नि की धाराओं पर, तरङ्गों**

पर विद्यमान हो करके अन्तरिक्ष में लय हो जाना चाहिये। अब देखो वह तो समष्टि, व्यष्टि से समष्टि में मानो देखो, साकल्य प्राप्त हो गया है। व्यष्टि से समष्टि को वह प्रवेश कर गया है परन्तु देखो इसी प्रकार मानव का जो जीवन है, जब सृष्टि के पिता ने इस ब्रह्माण्ड की रचना की, रचना के पश्चात् मानो देखो, ये नाना प्रकार के व्यञ्जनों वाली सृष्टि उद्बुद्ध हुई, मानो देखो, उसी में एक सन्निधान मात्र प्रभु का, मानो प्रकृति का स्वभाव अपने में जागरुक हो गया। जब अपने में वह स्वभाव जागरुक हो गया उसी स्वभाव में मानो देखो, अप्रत्याम् ब्रह्मा वाचाः हिरण्यम् प्रवहा लोकाम् वाचन्न अप्रमहे मानो देखो, ये नाना प्रकार का जो ये चारों प्रकार की जो सृष्टि की रचना है, इस रचना में उस महान् देव की मानो एक मानव शरीर की रचना की। उसी मेरे देव ने इस मानव शरीर की एक रचना की है जो मानो देखो, देवत्व कहलाता है। इसी में मानव मृत्युञ्जय बनता है और वह मानो देखो, एक यह जो मानव शरीर की जो रचना की तो उन्होंने ये घोषणा की क्या यह जो मानव का शरीर है यह एक प्रकार की यज्ञशाला है, यहाँ प्रत्येक मानव याग कर रहा है, प्रत्येक वाणी से मानो देखो, अपनी ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा सुदृष्टिपान करना, सु में आना मानो देखो, इन्द्रियों से याग कर रहा है। **यह मानव शरीररूपी एक प्रकार की यज्ञशाला है और इस यज्ञशाला में मेरे प्यारे! पञ्च महाभूत स्वाहा कह रहे हैं। अहा! देखो, वह आहुति दे रहे हैं और वही मेरे पुत्रो! देखो तरङ्गें बन करके इन्द्रियों में साकल्य बन करके बेटा! वह मानव मोक्ष की प्रतिभा को प्राप्त हो रहा है।** अन्धकार को त्यागा जा रहा है, प्रकाश को लाया जा रहा है, प्रकाश में रत्त होने के लिये तत्पर हो रहा है। तो मानो देखो, यह जो शरीररूपी यज्ञशाला है और बाहरीय जगत में जो यह मानो देखो, सृष्टि याग हो रहा है इसका, दोनों का समन्वय करना है और समन्वय करके मुनिवरो! देखो, उसके पश्चात् मानव को यह अनुभव होता है, प्रतीत होता है क्या मैं मृत्यु से पार हो गया हूँ, क्योंकि अन्धकार नहीं रह पाता और जब यह अन्धकार नहीं रह पाता, तो मुनिवरो! देखो, शारीरिक याग, आध्यात्मिक याग और मुनिवरो! भौतिक याग, दोनों का परस्पर समन्वय हो जाता है। और वही समन्वय मानव को महान् बना देता है अथवा पवित्र बना देता है।

आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना तो तुम्हें देने नहीं आया हूँ। मैं कोई व्याख्याता नहीं हूँ, केवल संक्षिप्त सा परिचय देने के लिय आया हूँ और वह परिचय क्या है, परिचय केवल यह है कि हम अपने मानो देखो, याग को और याज्ञिक विज्ञान को जानते हुये इस सागर से पार हो जायें, जैसा महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने अपने ऋषि-मुनियों का एक निराकरण किया। उन्होंने कहा, क्या यह यन्त्र है मेरा मानो जो शब्द के साथ में जो याग की मानो देखो, आकार में यह जा रहा है और वह वायु में प्रतिष्ठित हो जाता है और वह अन्तरिक्ष में लय हो जाता है। मानो देखो, वह क्रियाकलाप मुझे दृष्टिपात आ रहा है। मेरे प्यारे! उन्होंने वैज्ञानिक यन्त्रों का मानो देखो, निर्माण किया। उन्हीं वैज्ञानिक यन्त्रों से मानवीयत्व और मानवीय मानो बाह्य और आन्तरिक, दोनों की प्रतीति होने लगती है। तो आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, यह प्रसङ्ग मानो ऋषि-मुनियों का था, मानव मृत्यु से कैसे पार हो जाये। तो बेटा! वह **मानव, मानवीय शरीररूपी यज्ञशाला और बाह्य जगत की यज्ञशाला को, दोनों को जान करके, मानव दोनों का समावेश करते हुये मेरे पुत्रो! देखो वह मृत्युञ्जय बन जाता है।** वह ब्रह्म की आभा को, ब्रह्म का यह जो सृष्टि चक्र है अथवा जो यज्ञशाला के रूप में दृष्टिपात आ रहा है, इसको जान करके बेटा! वह पार हो जा रहा है।

ऋषि-मुनियों का विद्यालय व विज्ञानशाला में भ्रमण

आओ मेरे प्यारे! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने अपने वाक्य प्रगट करते हुये कहा प्रभु! यह जो मेरी यज्ञशाला है, तुमने याग किया है और देखो यागों के चित्र तुम्हारे मानो देखो, शब्दों के चित्र मेरे इस मानो देखो, यन्त्र में प्रवेश हो रहे हैं, यन्त्र में तुम्हें दृष्टिपात आ रहे हैं। आओ भगवन्! मैं अब तुम्हें अपने विज्ञानशाला, अपने मानो, अपने विद्यालय में तुम्हें भ्रमण कराना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज और मुनिवरो! देखो, आदि ऋषिवर मानो देखो, सब उनके साथ भ्रमण करने लगे। गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज इत्यादि को उन्होंने सम्बोधित करते हुये कहा क्या प्रभु! यह मेरी विज्ञानशाला है और इस विज्ञानशाला में मैं विद्यमान हो करके ब्रह्मचारियों को

शिक्षा देता रहता हूँ और स्वतः मैं कुछ न कुछ जानकारी करता रहता हूँ कि प्रभु का यह जो ब्रह्माण्ड है यह कितना अनन्तमयी है।

एक बिन्दु का रहस्य

एक समय मैं एक अपने आश्रम में विद्यमान हो करके एक वेद मन्त्र का अध्ययन कर रहा था और वह वेद मन्त्र यह कह रहा था **सम्भावहे प्राणा अस्सुतम् बिन्दु भवा सम्भवे गात्राणि गच्छतम् शिशु व्रत ब्रव्हा,** वेद का मन्त्र भगवन्! यह आख्यायिका मुझे स्मरण आयी और आख्यायिका यह कह रही थी सम्भवा दिव्यम् ब्रह्माः मानो देखो, माता के गर्भस्थल में एक शिशु है और शिशु के साथ में एक बिन्दु है और बिन्दु के प्रवेश होते ही माता के गर्भस्थल में बिन्दु से कैसे रचना होती है और मानो देखो, इस आभा में हम लग गये। एक समय ब्रह्मचारी कवन्धि और राजा रावण के विधाता कुम्भकरण और ब्रह्मचारिणी शबरी, मानो सब हम परस्पर इस बात पर विचार-विनिमय करने लगे। इतने में कहीं से भ्रमण करते हुये महर्षि बटुक मुनि महाराज आ पहुँचे, और महर्षि बटुक मुनि महाराज से ये हमने प्रश्न किया कि महाराज ये वेद का मन्त्र हमें क्या कह रहा है? वेद के मन्त्र में हमें यह भाव प्रतीत होता है – हम उस बिन्दु को जानना चाहते हैं। तो महात्मा बटुक मुनि महाराज ने न्यौदा में से इस मन्त्र को ले करके न्यौदा की प्रतिभा मानो देखो, उन्होंने प्रतिभासित की और उन्होंने कहा बहुत प्रियतम्! तो विचार-विनिमय करो, करते हुये ये सिद्ध हुआ कि हम मानो एक बिन्दु में जो चित्र है उसे दृष्टिपात करना चाहते हैं। तो मेरे पुत्रो! मुझे कुछ ऐसा स्मरण है क्या महर्षि भारद्वाज मुनि ने कहा कि ब्रह्मचारी सुकेता और शबरी और देखो कुम्भकरण इत्यादि विद्यमान हो करके हिमालय की कन्दराओं में इस वेदों के ऊपर अध्ययन करने लगे। जब वेद मन्त्र के ऊपर अध्ययन चलता रहा, मानो क्रियाकलाप होता रहा तो कुछ एक वर्ष के पश्चात् हम इसको यह जान पाये क्या मानव के एक ही बिन्दु में नहीं है, मानो एक-एक रक्त के बिन्दु में एक-एक चित्र उस मानव का विद्यमान है। मानो देखो, उसके ऊपर हमने यन्त्रों का निर्माण किया और ये यन्त्र जो तुम्हें दृष्टिपात आ रहा है भगवन्! इस यन्त्र को हमने जाना। तो

मानो देखो, उस यन्त्र में एक रक्त का बिन्दु हमने प्रवेश किया और एक रक्त के बिन्दु प्रवेश करने से जिस मानव का रक्त का बिन्दु था उस मानव का साक्षात्कार यन्त्र में चित्र हमें दृष्टिपात आने लगा। तो मानो इससे हमें यह सिद्ध हो गया क्या एक बिन्दु में मानव की रचना विद्यमान है। इतना परमाणुवाद विद्यमान है इससे मानव के, मानव की रचना हो जाये, मानव के शरीर के आकार की प्रतिभा प्रायः दृष्टिपात आती रहती है।

तो मानो देखो, इस प्रकार जब मुनिवरो! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने यन्त्र को दृष्टिपात कराया। तो मानो देखो, महर्षि गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने अपना एक रक्त का बिन्दु उस यन्त्र में प्रवेश किया और यन्त्र में जैसे रक्त का बिन्दु पहुँचा तो मुनिवरो! देखो, उसी रक्त के बिन्दु से एक मानो गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज का चित्र मानो देखो, उस रक्त के बिन्दु से मानो देखो, उन्हें दृष्टिपात आने लगा। मेरे प्यारे! देखो, भारद्वाज मुनि ने कहा कि महाराज! एक तुम्हारा ही रक्त का बिन्दु नहीं, परन्तु यहाँ जो एक-एक बारह-बारह वर्षों तक देखो, वस्त्र पर लगा हुआ रक्त का बिन्दु है, चाहे वह संसार में नहीं है प्राणी सौ वर्ष तक का मानो देखो, परम्परा एक बिन्दु क्यों न हो उस बिन्द का भी चित्र इस मेरे यन्त्र में दृष्टिपात आयेगा। मैं तुम्हें दृष्टिपात कराऊँगा भगवन्! मेरे प्यारे! देखो, कहीं भारद्वाज मुनि महाराज देखो, बटुक मुनि महाराज इत्यादियों ने इस वाक्य के ऊपर बहुत गम्भीरता से मनन और चिन्तन किया। तो महर्षि बटुक मुनि महाराज ने जब इस वेद मन्त्र को न्यौदा में से वर्णन कराया तो मानो देखो, वह वर्णम् अब्रहे मानो उनके कहीं पितामह और पितामह के भी महापितामह मानो देखो, ऐसा कहीं उन्होंने दृष्टिपात कराया क्या मानो ब्रह्मवाच्प प्रव्हे लोकाम् मेरे जो अस्सीवें महापिता, अस्सीवें मानो देखो, अस्सी वंशलज समाप्त हो गये और उनका कहीं एक मानो देखो, पितर और उनके देखो वहाँ उनके गृहाम् वाचनालय में क्या मुनिवरो! देखो, उनकी मानो कृति असतो में मुनिवरो! देखो, उनके कहीं वस्त्र विद्यमान थे। मेरे प्यारे! देखो, उस वस्त्र पर उनके अस्सीवें महापिता सोमवृत्तिका एक ऋषि हुये थे और वह अध्ययन करते थे और मनन करते थे। मानो देखो,

वह भ्रमण करते हुये शम्भु ब्रह्मा, मानो देखो, उनका वस्त्र कहीं रक्त के बिन्दु से कहीं वृतिक हो गया। मानो उसी रक्त के बिन्दु वह वस्त्र विद्यमान था। तो मुनिवरो! देखो, महर्षि बटुक मुनि महाराज ने वह रक्त का बिन्दु वाला वस्त्रः मेरे समीप लाये। मानो देखो, जिस वस्त्र का आयु मानो लगभग देखो, दो सौ पच्चासी वर्ष का आयु वाला वस्त्र था जो मानो देखो, उनके वाचनालय में उनके पिता, महापिताओं के यहाँ संग्रहालय में मानो वह वस्त्र था, उस वस्त्र पर रक्त का बिन्दु लगा हुआ था। तो जैसे यन्त्र में वह वस्त्र मानो ओत-प्रोत कराया तो उसमें देखो उनके अस्सीवें महापिता का चित्र मुनिवरो! देखो, यन्त्रों में दृष्टिपात आने लगा। उन्होंने कहा ये मुझे एक समय महर्षि बटुक मुनि महाराज ने मुझे मानो देखो, ला करके ये वस्त्र मेरे इस संग्रहालय में स्थिर कर दिया। तो मैं इस यन्त्र को मानो देखो, दृष्टिपात, जिसमें देखो उनके चित्र दृष्टिपात कराता रहता हूँ।

विचार-विनिमय क्या, मेरे प्यारे! देखो, भारद्वाज मुनि ने कहा क्या इसी प्रकार मैंने याज्ञिक यन्त्रों को जान करके, परमाणुवाद को जान करके, मानो मैंने इन यन्त्रों का निर्माण किया है। एक मानव है, उस मानव के शब्दों की प्रतिभा मानो अन्तरिक्ष में विद्यमान है और वह आश्रम में जिस स्थली पर रहता है वहाँ भी वह विद्यमान रहती है। परन्तु देखो, जब भी हम किसी काल में देखो, उस मानव की मृत्यु हो जाये या वो मानव का प्रस्थान हो जाये, तो उनके विचारों के चित्रों को, मानो मेरे यहाँ एक यन्त्र है उनके विचारों के साथ उनके चित्र लिये जाते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, जब गाड़ीवान रेवक, वैशम्पायन इत्यादि मुनियों को जब मुनिवरो! देखो, उन्होंने वैज्ञानिक यन्त्रालय में उन्हें भ्रमण कराया, तो बेटा! ऋषिवर आश्चर्यचकित हो गये। उन्होंने कहा क्या यही तुमने यन्त्र अब तक दृष्टिपात किया। आओ मेरे प्यारे! देखो, वह यन्त्रशाला में ले गये जहाँ विज्ञानशाला थी। मेरे प्यारे! देखो, भारद्वाज मुनि ने कहा क्या मेरे यहाँ एक ये ...

शेष अनुपलब्ध....

दिनाँक : 5 मार्च, 1985

॥ ओ३म् ॥

नम्रता ही जीवन

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी प्रतीत हो गया होगा कि जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का वर्णन होता रहता है। मनोहरता में परणित किया गया है, जिसके ऊपर प्रायः मानव को विचार-विनिमय करने की आवश्यकता रहती है क्योंकि जिसका ज्ञान, उस परमपिता परमात्मा की प्रतिभा है, वेदों में अनुपम ज्ञान है लेने के पश्चात् मानव का जीवन अमृत बन जाता है। प्रायः मानव को अपने क्योंकि संसार में जब मानव आता है उस जीवन को अमृत बनाना ही है। परमपिता परमात्मा के ब्रह्माण्ड में उसकी मनोहर रचना को विचारना उसके लिये बहुत अनिवार्य होता है। क्योंकि प्रायः मानव मानवत्व को ही विचार-विनिमय करता है, और विचारों के क्षेत्र में उस मानव की प्रतिभा उज्ज्वल बना करती है। तो मेरे प्यारे! आज का हमारा यह वेद मन्त्र ऋषिवर क्या कह रहा था – वेद कह रहा है कि **मनवंचतम् प्रमहे असवन्तः मा नाः** मानो वह दो ही वस्तु हैं संसार में, जैसा मैंने इससे पूर्व काल में भी प्रगट किया है, संसार में कोई और तृतीय वस्तु प्राप्त नहीं होती। क्योंकि वेदों में उस परमपिता परमात्मा की अनुपम ज्ञान और विज्ञान का वर्णन आता रहता है। परन्तु जहाँ ज्ञान और विज्ञान दोनों ही एकत्व हैं, वहाँ मानवत्व का भी एक सुन्दरत्व विराजमान रहता है। जहाँ वेद के प्रकाश को अपनाने लगते हैं, तो मानव का अन्तःकरण प्रकाशमान हो जाता है, आत्मा पर उसका जीवन निर्भय हो जाता है। क्योंकि मानव को सबसे प्रथम अपने आत्मबल को विचारना है, अपनी आत्मा की उन्नति करना है क्योंकि **संसार में आना, उसके लिये आत्मत्व को जानने का ही एकोकी कार्य रह जाता है।** जब हम यह विचार-विनिमय करते हैं कि **आत्मा में ही उस परमपिता परमात्मा का ज्ञान**

और विज्ञान है, परन्तु यहाँ नाना प्रकार की प्रतिभाओं में, मानव के जीवन की प्रतिभा विराजमान होने लगती है।

प्रभु की प्रतिभा

मेरे प्यारे ऋषिवर! आओ, आज हम उस अपने प्यारे प्रभु का गुणगान गाते चले जायें, जो प्रभु हमारे जीवन में ओत-प्रोत है, हमारे जीवन का सदैव साथी बना हुआ है। क्योंकि प्रायः मानव यह उच्चारण करता चला आया है कि वास्तव में प्रभु की प्रतिभा विराजमान हमारे मस्तिष्कों में होती है। हमारे यहाँ किन्हीं-किन्हीं ऋषि-मुनियों का विचार-विनिमय होने लगता है, परन्तु एक समय बेटा! देखो, कुछ मनोहर ब्रह्मवेत्ता, जिज्ञासु विचार-विनिमय करने लगे, क्या यह जो परमात्मा ने ब्रह्माण्ड रचाया है, यह क्या है? यह क्यों रच गया? और नाना प्रकार के प्रश्नों को ले करके जब उद्यत हुये तो विचार-विनिमय आया, कि प्रभु ने यह जो जगत रचा है इसका कोई मूल कारण है। परन्तु वह कारण कौन है? कारण है या इस ब्रह्माण्ड की रचना बिना कारण के हो सकती है, अथवा नहीं हो सकती। तो इसके कारण के लिये विचार-विनिमय किया जाये। तो बेटा! और भी अनुसन्धान किया जाता है, आदि-आदि ऋषियों ने नाना विचार-विनिमय करते हुये और अनुसन्धानवेत्ताओं ने कुछ ऐसा कहा है, क्या इस ब्रह्माण्ड का आदि मूल कारण, क्या यह आत्मा हो सकता है, या प्रकृति हो सकती है। परन्तु यह प्रकृति तो जड़वत है, इसमें क्षमता इतनी नहीं है, परन्तु आगे विचार-विनिमय हुआ कि भई! इसका रचियता तो कोई है परन्तु वह कौन है बेटा! मूल कारण कौन है उसी को प्रभु चैतन्य देव स्वीकार किया गया है। क्योंकि उस चैतन्य देव की प्रतिभा ही हमें प्रतीत हो रही है, जहाँ हमारा मानवत्व जाता है, जहाँ मानसिक प्रक्रिया जाती है, वहीं वे परमपिता परमात्मा विद्यमान हमें प्रतीत होने लगता है।

मनस्तत्त्व

आओ, मेरे प्यारे ऋषिवर! आज हम उस परमपिता परमात्मा की महती, परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते चले जायें जो परमात्मा इस

संसार में एक महान् है, जिसकी रचना से यह ब्रह्माण्ड क्रियाशील हो रहा है, क्योंकि मानव को नाना प्रकार के वाक्यों को विचार-विनिमय करने की सदैव आवश्यकता रहती है। मैंने बहुत पूर्व काल में कहा है, क्या यह मानव इतनी विड़म्बना में क्यों विचर रहा है, कोई मानव देखो, पुत्र से दुःखित हो रहा है, मेरी प्यारी माता अपने पुत्रों से व्याकुल हो रही है, अहा! जब पुत्र उत्पन्न हो जाता है तो आगे उसके कर्त्तव्य से व्याकुल, विड़म्बना से परणित हो जाती है। क्या, इसी प्रकार का मुनिवरो! गुरु के कुल में शिक्षार्थी जाता है, उस समय यदि शिक्षार्थी सुन्दर हो, तो वह आचार्य प्रसन्न है, यदि शिक्षार्थी का बुद्धि कुछ उन्नत नहीं हो तो वह आचार्य दुःखित हो रहा है, यह सब कुछ क्या है? उस विड़म्बना में पहुँचने के पश्चात् मानव को विचार-विनिमय करना होता है। यह क्या है, क्या मेरी प्यारी माता क्यों दुःखित हो रही है? क्यों विड़म्बना में पनप रही है? परन्तु यदि वह विड़म्बना भी प्रायः पूर्ण हो जाती है, उसके पश्चात् भी उसे विड़म्बना रहती है, आकांक्षाएँ रहती हैं, आचार्य को आकांक्षा, शिष्य को आकांक्षा, भिन्न-भिन्न प्रकार के वाक्य जब मानव के समीप आने लगते हैं, तो यह विचार आता है, क्या, यह जो आकांक्षाएँ, विड़म्बनाएँ हैं, यह क्यों हैं? क्योंकि देखो, उनका जो मनस्तत्त्व है, उस मनस्तत्त्व के अनूकुल कार्य नहीं होता। जब मनस्तत्त्व के अनूकुल कार्य नहीं होता, तो मुनिवरो! उनके द्वारा, स्वाभाविक विड़म्बना उत्पन्न हो जाती है, उस विडम्बना में पहुँचने के पश्चात् मानव का हृदय दुःखित होने लगता है। मानव की अनुपम जो देन है, मानो देखो, वह भी गधेले में पहुँच जाती है। परन्तु आगे विचार-विनिमय होता है, क्या यह सब कुछ क्या है?

ऋषियों ने कहा है, क्या जब हम महर्षि कपिल मुनि जी के सिद्धान्त को विचारते हैं, जो कपिल मुनि जी ने कहा है कि मानव का निर्माण, जब मानव का निर्माण होता है तो दो वस्तुयें मानव के जीवन में मुख्य होती हैं, जिनको हम मुनिवरो! देखो, कामनाएँ कहते हैं, छाया कहते हैं। अहा! जिसको हम **तृष्णा** भी कहते हैं। तृष्णा के गर्भ में, बेटा! मान और अपमान दोनों विराजामन होते हैं।

क्योंकि तृष्णा के गर्भ में मान, अपमान होते हैं, मान और अपमान, मानो यदि मानव का, आचार्य का शिक्षार्थी सुन्दर है, महान् है, परन्तु योग्य है, सुयोग्य होता हुआ वह अपने कार्य को करता चला जाता है तो गुरु के उस महान् तृष्णा में मानो देखो, उसको हम मान कहते हैं, वह मान होता है, वह तृष्णा के गर्भ में विराजमान होता है। यदि शिक्षार्थी सुन्दर नहीं है, वह सुयोग्य नहीं है, मानो देखो, वह उदण्ड है, चञ्चल है तो आचार्य दुःखित होता है, तो मानो माता-पिता भी दुःखित होते हैं। क्यों होते हैं क्योंकि उसके गर्भ में, तृष्णा के गर्भ में अपमान है। बेटा! उसका अपमान होता है, तो मान और अपमान दोनों में ही मनस्तत्त्व विराजमान होता है। **इस मनस्तत्त्व के अनूकुल कार्य न होना ही मानव को विड़म्बना है,** और मानव विड़म्बना में परणित होता चला जाता है।

मान अपमान के त्याग से उन्नत जीवन

मेरे प्यारे ऋषिवर! आज हम अपने प्यारे प्रभु का गुणगान गाते हुये यह कहा करते हैं कि मान अपमान दोनों को ही त्याग दो। यदि कोई इस मानो संसार में जीवन को उन्नत बनाना चाहता है, पवित्र बनाना चाहता है, महान् बनाना चाहता है तो मान और अपमान को, दोनों को ही त्यागना होगा। क्योंकि यदि दोनों को नहीं त्यागा जायेगा, तो जीवन किसी काल में उन्नत बन ही नहीं सकता। उसी मानव का जीवन सौभाग्यशाली है, बेटा! जिसके द्वारा मान अपमान की तरङ्गें नहीं होती, जिसका मान अपमान से जीवन उपराम होता है, मानो वह ऊँचा होता है, प्रबल होता है। मुझे स्मरण है, बेटा! यहाँ नाना प्रकार की वार्त्ताएँ, नाना वाक्य जब स्मरण आने लगते हैं, तो हृदय गद्-गद् होने लगता है। बेटा! यहाँ मान अपमान दोनों ही मानव को मोहित बना देते हैं। उज्ज्वल बना देते हैं।

महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज का सङ्कल्प

एक वार्त्ता मुझे स्मरण आती चली गई। बेटा! एक समय महाराजा वशिष्ठ मुनि महाराज बड़े आनन्दपूर्वक विराजमान थे। परन्तु एक समय महाराज विश्वामित्र भ्रमण कर रहे थे। वह अपनी सेना के सहित बेटा! भ्रमण करते हुये

आनन्द से भ्रमण कर रहे थे, परन्तु सायंकाल हो गया, अन्धकार छा गया। जब भयङ्कर वन में जहाँ माता अरुन्धती और वशिष्ठ मुनि, दोनों विराजमान थे वह विश्वामित्र स्वयं पहुँचे, उन्होंने कहा महाराज ऋषिवर! अन्धकार छा गया है, हम विराम करना चाहते हैं। उन्होंने कहा बहुत सुन्दर। उन्होंने कहा महाराज! हमारे लिये क्या भोजन, कैसे प्राप्त हो सकता है? उन्होंने कहा सब कुछ प्राप्त हो जायेगा। तो मुनिवरो! वह स्थिर हो गये। भयङ्कर वन में सेना सहित महाराज विश्वामित्र स्थिर हो गये। अहा! मुनिवरो! महाराजा वशिष्ठ मुनि महाराज ने कामधेनु गऊँ से कहा हे कामधेनु! तुझे नाना प्रकार के पदार्थों को पान कराना है। तो कहते हैं मुनिवरो! कि वह तो कामधेनु थी दूध देती रही अहा! मुनिवरो! देखो, उस संसार की जो कल्पना होती है, वह मानसिक कल्पना भी होती है, बेटा! मानसिक सन्तुलन भी होते हैं, महाराज वशिष्ठ मुनि महाराज का यह सङ्कल्प था, क्या, राजा विश्वामित्र की सर्वस्व सेना तृप्त हो जानी चाहिये। बेटा! वह ऋषि का सङ्कल्प था, क्योंकि मानव का सङ्कल्प जितना परिपक्व होता है उतनी उसमें उज्ज्वलता होती है, परन्तु मानसिक सङ्कल्प को तपाने की आवश्यकता होती है, वह तपाया जाता है। बेटा! उसके तपाने का प्रकार क्या है? मैं उच्चारण करूँगा, परन्तु प्रथम वाक्य यह प्रारम्भ कर रहा था कि हम क्या, कामधेनु गऊँ दूध देती रही। विश्वामित्र की सेना का मानसिक सङ्कल्प और दुग्ध के आचमन से बेटा! सर्वत्र सेना तृप्त होती चली गई।

राजा विश्वामित्र की इच्छा

जब तृप्त होती चली गई, तो मेरे प्यारे ऋषिवर! वह तृप्त हो गई, अहा! विश्वामित्र ने, रात्रि काल में यह विचारा, जब विश्राम करने लगे, अपने सेनापतियों को एकत्रित करके, महाराज विश्वामित्र ने कहा भई! इसके द्वारा, वशिष्ठ मुनि के द्वारा जो यह कामधेनु है यह तो राष्ट्र में हो जाये तो बड़ा ही सुन्दर हो, अब हमें क्या करना है? इच्छा तो ऐसी कर रही है कि ऋषि की कामधेनु को अपने आश्रम में प्रविष्ट कराना चाहिये, और सेनापतियों ने वाक्यों को स्वीकार कर लिया।

कामधेनु की विजय

बेटा! प्रातःकाल हुआ, प्रातःकाल में महाराज विश्वामित्र ने वशिष्ठ जी से कहा कि हे महाराज! यह जो तुम्हारी हमारी ऐसी इच्छा है क्या हे ब्राह्मण! कामधेनु है, इसे हमें अर्पित करा दीजिये। हमारी इच्छा है कि हम अपने राष्ट्र, गृह में प्रविष्ट कराना चाहते हैं। महाराजा वशिष्ठ मुनि ने कहा भई! इन्द्र महाराज ने अर्पित की थी, तो मेरे प्यारे! जब यह वार्त्ता प्रगट होती रही, परन्तु दोनों का विवाद हो गया, विवाद होने का परिणाम यह हुआ कि दोनों का संघर्ष प्रारम्भ होने लगा। बेटा! जब दोनों का संघर्ष प्रारम्भ हुआ उस संघर्ष में क्या हुआ, क्या, वह कामधेनु को, महाराज विश्वामित्र को देखो, वह आगे अश्वत् करते हुये, जब वह भ्रमण करने लगे, महाराज वशिष्ठ ने कहा हे कामधेनु! मैं तुझे आज्ञा नहीं दे रहा हूँ कि तुम राजा के गृह में प्रविष्ट हो जाओ। परन्तु यदि तुम्हारी इच्छा हो, तुम स्वयं जा सकती हो, तुम स्वतन्त्र हो। क्योंकि किसी के ऊपर बन्धन किसी प्रकार का मेरे यहाँ नहीं है। जब यह वाक्य महाराज वशिष्ठ ने प्रगट किया, कामधेनु ने उसी समय अपना एक सिंहनी का स्वरूप धारण कर लिया। वहाँ महाराज विश्वामित्र की सेना से संग्राम होने लगा, कहा जाता है, बेटा! उस कामधेनु ने नाना उसके युवकों को, बेटा! पृथ्वी में अर्पित कर दिया और वह कामधेनु की विजय हो गई। विजय हो जाने के पश्चात् वशिष्ठ जी के आश्रम में प्रविष्ट हो गई।

महाराज विश्वामित्र का सङ्कल्प

महाराज विश्वामित्र को सङ्कल्प आ गया कि ऐसी तपस्या करनी चाहिये, मानो जिसकी सहायता करने के लिये यह पशु भी हुआ करते हैं। देखो, क्या कामधेनु वशिष्ठ जी की आज्ञा का पालन कर रही है। परन्तु मुझे भी इस प्रकार की तपस्या करनी चाहिये, पशु और पक्षी भी मेरी आज्ञा का पालन करने वाले हों। मेरे प्यारे ऋषिवर! ऐसा श्रवण किया गया है, क्या उन्होंने मन ही मन में यह सङ्कल्प धारण कर लिया और धारण करते हुये, मुनिवरो! देखो, उन्होंने गायत्रियों का पठन-पाठन किया, गायत्रियों का अध्ययन किया, गायत्रियों को बेटा! उन्होंने

लाखों गायत्रियों का पाठ करने के पश्चात्, जब वह तपने लगे, तपस्या में पारङ्गत हो गये – एक समय बेटा! उसके मन में सङ्कल्प आया कि मैं अब वशिष्ठ जी के आश्रम में पहुँचूँगा, परन्तु उनके आश्रम में जा करके, मैं अपनी वार्त्ताओं को प्रगट करूँगा। अब तो मैं ऋषि बनने के लिये जा रहा हूँ।

महाराजा विश्वामित्र का महर्षि वशिष्ठ मुनि आश्रम में आगमन

मुनिवरो! वह अस्त्रों-शस्त्रों से युक्त होते हुये और अश्व पर सवार हो करके वह भ्रमण करते हुये वह आश्रम में आ पहुँचे। बेटा! आश्रम में आने के पश्चात्, मुनिवरो! देखो, महर्षि वशिष्ठ मुनि ने जब विश्वामित्र को दृष्टिपात किया। उन्होंने कहा आईये, राजर्षि आईये! पधारिये। परन्तु राजर्षि उच्चारण करते ही अहा! उनके क्रोध की कोई सीमा न रही। उसने कहा अरे! ब्राह्मण क्या तुझे यह अभिमान है, क्या मैं बाह्मण हूँ? ऋषि हूँ, तपा हुआ हूँ, मानो देखो, मैं भी एक उज्ज्वल हूँ, तपा हुआ हूँ, परन्तु तुम्हें मैं नष्ट-भ्रष्ट कर सकता हूँ। अहा! ऋषि शान्त मुद्रा से, उनके वाक्यों को सहन करते रहे, परन्तु उनका जीवन तो मान अपमान से उपराम था। मान, अपमान के आङ्गन में नहीं था, क्योंकि उपराम होने के नाते, उन्होंने कोई वाक्य उच्चारण न किया। कहते हैं, विश्वामित्र ने उनके नाना पुत्रों को नष्ट कर दिया, हनन कर दिया, अस्त्रों-शस्त्रों से। बेटा! वह भ्रमण करता हुआ, अहा! शान्त मुद्रा से, सब कुछ सहन कर लिया। बेटा! वह विश्वामित्र ने यह विचारा कि मैं तपस्या में अभी सुन्दर नहीं बना हूँ। बेटा! उन्होंने अपने जीवन को और तपाया, केवल भिक्षा का अन्न पान करते थे और गायत्री का चिन्तन करते थे। कहते हैं कि करोड़ों गायत्रियों का चिन्तन करने के पश्चात्, बेटा! वह पुनः उस अस्त्रों-शस्त्रों से युक्त होते हुये, वह भ्रमण करते हुये बेटा! महर्षि वशिष्ठ मुनि आश्रम आ पहुँचे, और वशिष्ठ जी ने कहा आईये, राजर्षि! आईये, पधारियें। अहा! उन्होंने राजर्षि उच्चारण किया, उसी काल में बेटा! उनके क्रोध की सीमा न रही, उनके अपमान की सीमा न रही, उन्होंने यह अपने में अनुग्रत किया कि मेरा एक अपमान हुआ है, मैं अपमानित हो गया हूँ। उस समय कहा अरे! ब्राह्मण अरे! वशिष्ठ तुम्हें लज्जा नहीं आती, तुम अनुचित

वाक्य उच्चारण कर रहे हो। क्या, मैं ब्रह्मर्षि नहीं हूँ, मैं इतना तप गया हूँ। उन्होंने कहा कि नहीं तुम मेरी दृष्टि से राजर्षि हो। अन्त में बेटा! उनके नाना पुत्रों को नष्ट किया। जब भी नष्ट किया, परन्तु क्या करें, वह लज्जित न हुये, वशिष्ठ जी, क्योंकि वह उपराम थे, मान-अपमान से, मोह-ममता से भी उनका जीवन उपरामता को पहुँच चुका था। उन्होंने सहन किया, और यह कहा बहुत सुन्दर। परन्तु प्रारब्ध में परणित होता चला गया।

विश्वामित्र ने विचारा कि पुनः तपूँगा। बेटा! वह पुनः तपस्या करने के लिये जा पहुँचे, और वह तपस्या करते रहे। तपस्या करने के पश्चात्, बेटा! जब तृतीय काल में अश्व पर सवार हो करके चले, अस्त्रों-शस्त्रों से युक्त होते हुये वह भ्रमण करते, वशिष्ठ मुनि महाराज के द्वार पर आ पहुँचे। बेटा! उस काल में यह परम्परा थी, यह परिपाटी थी, क्या जिसको वह वशिष्ठ मुनि महाराज ब्रह्मर्षि उच्चारण कर देते थे, वह सर्वोपरि ब्रह्मर्षि बन जाता था। मानो जिसको राजर्षि उच्चारण करते थे, यह वशिष्ठ मुनि महाराज का कार्य था। मुनिवरो! वह जब आये, तृतीय काल भी, उसके पश्चात् भी उन्हें राजर्षि कहा। उन्होंने कहा आज यदि मेरा नाम भी तपा हुआ ऋषि है, मैं आज तुम्हारे प्राणों का हनन कर दूँगा। बेटा! पूर्णिमा का दिवस था, पूर्णिमा के दिवस होने के कारण मानो देखो, विश्वामित्र उनके आश्रम में ही, सायंकाल का समय था, बेटा! उनके आश्रम में शान्त मुद्रा को प्राप्त हो गये। शान्त, एकान्त स्थान में विराजमान हो गये। अपने अस्त्रों-शस्त्रों से युक्त और यह सङ्कल्प धारण कर लिया था कि आज मैं वशिष्ठ को नष्ट करूँगा। आज मैं उनके प्राणान्त करूँगा।

महर्षि वशिष्ठ मुनि, माता अरुन्धती का चिन्तन

बेटा! पूर्णिमा का दिवस था, परन्तु पूर्णिमा का चन्द्रमा उदय होने जा रहा था, माता अरुन्धती और महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज दोनों विराजमान हो गये व प्रशंसा होने लगी। माता अरुन्धती ने कहा कि महाराज! आज देखो, पूर्णिमा का चन्द्रमा कितना सम्पन्न कलाओं से परिपक्व है, परिपूर्ण है, यह सम्पन्न षोडश कलाएँ इसके गर्भ में विराजमान हैं। यह कैसा अद्भुत प्रकाश दे रहा है? महर्षि

वशिष्ठ बोले हे महारानी अरुन्धती! आज देखो, यह प्रकाश तो कुछ भी नहीं है महाराज विश्वामित्र के आगे, महाराजा विश्वामित्र की तपस्या में प्रकाश है, ओज है, अथवा तेज है, क्योंकि वह चन्द्रमा का प्रकाश इसकी तपस्या के आगे न होने के तुल्य ही माना गया है। महारानी अरुन्धती ने कहा प्रभु! यह आप क्या उच्चारण कर रहे हैं, आपको तो नाना वाक्य उच्चारण करते हैं, अशुद्ध वाक्यों का प्रतिपादन करते हैं, और यह कहा करते हैं, क्या आज मैं इसको नष्ट करूँगा, आपके नाना पुत्रों को नष्ट किया है। उन्होंने कहा देवी! इसका अभिप्रायः यह नहीं है, क्या, मैं उसको वह मुझे अशुद्धता उच्चारण करता है, नाना प्रकार असभ्यता का व्यवहार है, उसका अभिप्रायः यह नहीं कि वह तपस्वी नहीं रहा है। देवी! वह तपस्वी है, परन्तु महान् तपस्वी है, इसमें सूक्ष्मता है, तो वह क्या? वह राजर्षि बन करके आता है। मेरे से अस्त्रों-शस्त्रों से युक्त हो करके आता है।

महाराजा विश्वमित्र ब्रह्मर्षि बन गये

मेरे प्यारे ऋषिवर! जब यह वाक्य उन्होंने प्रगट किया तो विश्वामित्र जो स्थान में विराजमान थे उनके उन वाक्यों का श्रवण किया, श्रवण करने के पश्चात्, उन्होंने कहा अरे! तू कितना धूर्त है, कितना दुष्ट है, पामर है मानो देखो, यह कैसा सुन्दरम् ब्रह्मे, यह कैसा उज्ज्वल ऋषि है, जो तू उसे नष्ट करने के लिये विराजमान है, और वह तेरे तप की प्रशंसा कर रहा है। इतना हानि पहुँचाने के पश्चात् भी, तेरी प्रशंसा कर रहा है। बेटा! अस्त्रों-शस्त्रों को त्याग करके और वह वशिष्ठ मुनि के चरणों में ओत-प्रोत हो गये। ओत-प्रोत हो जाने के पश्चात्, उस समय वशिष्ठ जी ने कहा आईये, ब्रह्मर्षि महाराज! आईये, पधारिये। उस समय बेटा! जब ब्रह्मर्षि कहा, विश्वामित्र जी बोले कि प्रभु इससे पूर्व आपने मुझे ब्रह्मर्षि क्यों नहीं कहा था? उन्होंने कहा अरे! भई जब तुम क्षत्रिय का स्वरूप धारण करके आते थे, तो मैं तुम्हें ब्रह्मर्षि क्यों उच्चारण करता। क्योंकि **ब्रह्मर्षि का अभिप्रायः यह है** कि जो ब्रह्म में विचरण करता है, क्योंकि ब्रह्म अस्त्रों-शस्त्रों से युक्त नहीं है, संसार में ब्रह्म नग्न है, विवेकी है और देखो, मान अपमान से परे है। जो इस प्रकार का बन करके आता है वही तो ब्रह्मर्षि कहलाया जाता है।

जीवन को उन्नत बनाने की प्रेरणा

मेरे प्यारे ऋषिवर! आज के हमारे वाक्यों का अभिप्रायः यह कि मानव का जीवन वही उज्ज्वल होता है, जो मानो मान और अपमान से परे होता है, दूरी होता है। जो मानव जीवन में उज्ज्वलता चाहता है, महानता को चाहता है वह प्रभु की महिमा का विचार-विनिमय करता रहता है। ब्रह्मवेत्ता बनने के लिये बेटा! उसमें नम्रता का आ जाना बहुत अनिवार्य है। निरभिमानता का आ जाना बहुत अनिवार्य है, क्योंकि परमात्मा को न तो मान ही व्यापता है, न अपमान व्यापता है, एक रस रहने वाला है। इसी प्रकार जो ब्रह्मवेत्ता बनना चाहता है, ब्रह्म की गोद में जाना चाहता है, वह इस संसार से उपरामता को चाहता है बेटा! वह मान और अपमान दोनों को त्यागता चला जाये। तो मेरे प्यारे ऋषिवर! आज का हमारा वाक्य यह क्या कहता चला जा रहा है कि हम प्रभु के आङ्गन में जाने के लिये सदैव अपने जीवन को उन्नत बनाएँ। मान, अपमान को हम तृष्णा को त्यागने वाले बनें, क्योंकि तृष्णा के गर्भ में मान और अपमान विराजमान होता है। यह महर्षि कपिल मुनि जी ने कहा है, मैं नहीं कहता हूँ, बेटा! आदि ऋषिवर कहते हैं, कपिल मुनि जी ने कहा है और भी आदि ऋषियों ने वर्णन किया है इस सम्बन्ध में, परन्तु आज का हमारा वाक्य यह उच्चारण करता चला जा रहा है कि हम संसार में अपने जीवन को उन्नत बनाना चाहते हैं। राष्ट्रवाद को ऊँचा बनायें, मानववाद को ऊँचा बनायें, विज्ञान को ऊँचा बनायें, परन्तु देखो, आज मानव विज्ञानवेत्ता बनना चाहता है, वह भी परमाणुवाद में जाना चाहता है, जैसा मैंने कल के वाक्यों में अपने विचार प्रगट किये थे। आज भी मैं उन विचारों में नहीं जाना चाहता हूँ क्योंकि यह तो भयङ्कर एक प्रकार का वन है, मैं उन विचारों को ले करके नहीं चाहता हूँ, जिन विचारों में अधिक गम्भीरता से विद्या को पान किया गया है। निगलने वाले वशिष्ठ मुनि महाराज और वमन किये को पान करने वाले भगवान् राम जैसे शिष्य इसी प्रकार देखो, राष्ट्रवाद और मानव सिद्धान्त का विधान ऐसा होता है। बेटा! राजा के राष्ट्र में शिक्षार्थी के कुल में मानो देखो! मानो आचार्य के कुल में बेटा! उसकी मानवता ही विराजमान रहती है। उसका चरित्र उसके समीप रहता है।

जीवन में धर्म और मानवता

मेरे प्यारे ऋषिवर! जब यह मुझे स्मरण आने लगता है कि हम अपने राष्ट्र को, मानवता को उन्नत बनाना चाहते हैं, बेटा! तो उन्नत उसी काल में बनता है जब धर्म उसके समीप होता है। यदि धर्म की रक्षा नहीं होती, चरित्र की रक्षा नहीं होती, मानव कर्त्तव्यवादी नहीं होता बेटा! वह राष्ट्र आज नहीं तो कल ऋषिवर! नष्ट-भ्रष्ट हो जायेगा। मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहता है, इस संसार की सिद्धान्त में विचारधारा को अपनाया जाता है, तो यह विचार आता रहता है कि हम राष्ट्र को उन्नत बनाने में कितने सफलता को प्राप्त हो सकते हैं। क्योंकि सबसे प्रथम यहाँ राष्ट्र का निर्माण करने वाले निर्माणवेत्ता भगवान् मनु जी हुये हैं, भगवान् मनु जी ने कहा है कि राजा के राष्ट्र में देखो, मानव से ले करके देखो, जलचरों तक की रक्षा होनी चाहिये। राजा के राष्ट्र में – जिस राजा के राष्ट्र में धर्म की रक्षा नहीं होती, धर्म के साथ में रक्षा नहीं होती उसके लाभ हानि को विचारा नहीं जाता, बेटा! उस राजा के राष्ट्र में प्रायः हानि हुआ करती है, आदि ऋषिवर कहते हैं, आचार्यजनों ने कहा है। मानवता की विचारधारा में आता है कि राजा के राष्ट्र में सबसे प्रथम जो लक्षण है वह अहिंसा परमोधर्म होना चाहिये। अहिंसा परमोधर्म किसे कहते हैं, राजा के राष्ट्र में बेटा! एक मानव से ले करके और मछली तक, राजा के राष्ट्र में नष्ट नहीं होनी चाहिये। क्योंकि वह प्रत्येक, जो प्रभु ने, जो प्राणी रचा है, वह किसी न किसी लाभ के लिये होता है, मानो उसके श्वासों में, अनुपम गतियों में कोई लाभ होता है, यहाँ प्राणी, एक-दूसरे प्राणी का बेटा! रक्षक होता है, भक्षक नहीं होता। आज हम जब विचारने लगते हैं कि राजा के यहाँ अब्रतो पर ब्रह्मे मानो जब यह विचारा जाता है कि राजा और मानव क्यों विचारें क्योंकि जब मानव किसी के प्राणों की रक्षा कर नहीं सकता तो उसके भी, प्राणों को भी हनन करने का अधिकार नहीं होता है। बेटा! प्रभु की सृष्टि में एक नियम होता है। यह प्राण ही इस ब्रह्माण्ड में बेटा! इसी के गर्भ में धर्म होता है, बेटा! क्योंकि मानव यदि किसी प्राणी को जीवन दे सके, बेटा! जीवन तो दे नहीं सकता, जीवन को हनन करता रहेगा, तो

बेटा! देखो, उस प्राणी का अधिकार नहीं होता, क्योंकि प्रभु की सृष्टि अनुपम है, जो प्रभु के अधिकार का वाक्य है, प्रभु ही पूर्ण किया करते हैं।

बेटा! आज मैं इस वाक्य को बहुत दूरी ले जाता चला जा रहा हूँ। वाक्यों का अभिप्रायः यह है कि राजा के राष्ट्र में, आचार्य के कुल में धर्म और मानवता होनी चाहिये। चरित्रवान होना चाहिये, जिससे बेटा! हम अपने जीवन को और मानवता को उन्नत बनाते चले जायें। बेटा! मैं अधिक चर्चा तो प्रगट किया नहीं करता हूँ, हमारे वाक्यों का अभिप्रायः यह कि जो मानव प्रभु के आङ्गन में जाना चाहता है, वह मान और अपमान से उसका जीवन उपराम होना चाहिये, और वह राष्ट्रवाद को उन्नत बनाना चाहता है, वह बेटा! देखो, अहिंसा परमोधर्म और धर्म को अपनाता चला जाये, जैसा भगवान् मनु जी ने कहा है, रक्षार्थी बनता चला जाये, वहाँ मानवत्व की रक्षा करता हुआ, और आचार्य कुल में शिक्षार्थी बनता हुआ, आचार्य में रमण करता हुआ, अपने मानवत्व को, अपने जीवन को उन्नत बनाता चला जाये। यह है बेटा! आज का हमारा वाक्।

प्रकाश मानव का जीवन है

वेद हमें क्या देता है – वेद हमें प्रकाश देता है, जीवन देता है, ज्योति देता है, अनुपमता देता है, अहिंसा परमोधर्म देता है। बेटा! देखो, जिसको हम परमधर्म कहते हैं, धर्म की नाना परम्पराएँ संक्षेप में तुम्हें परिचय कराई थीं। आज मैं उनका उल्लेख, द्वितीय काल में नहीं प्रगट कराने जा रहा हूँ, वाक्यों का अभिप्रायः यह है कि हम वास्तव में उन्नतिशील बनते चले जायें, उन्नत होते चले जायें, हमारा जीवन उन्नततशील बनता चला जाये। यह है बेटा! आज का हमारा वाक्य, आज के इन वाक्यों का अभिप्रायः क्या है, क्या हम प्रभु का चिन्तन करते हुये, उस मानवत्व की रक्षा करते हुये, धर्म और प्रकृति को विचार-विनिमय करते हुये, अपने जीवन को उन्नत बनाते चले जायें। यह है बेटा! आज का हमारा वाक्। आज के इन वाक्यों का अभिप्रायः बेटा! तुमने जान लिया होगा। क्योंकि हमारे वाक्यों का अभिप्रायः यह है कि हम वेद को अपनाते चले जायें, मानव को प्रकाश में ले जाने वाला है। प्रकाश मानव का

जीवन है, क्योंकि प्रकाश के आश्रित मानव का जीवन होता है, जैसे राजा के राष्ट्र में धर्म, धर्म के ऊपर राजा का राष्ट्र होता है, क्योंकि धर्म नहीं होगा तो राजा का राष्ट्र भी नहीं रहेगा, क्योंकि **राष्ट्र का जो निर्माण होता है, वह धर्म की रक्षा करने के लिये हुआ करता है।** बेटा! राजा की – क्योंकि राजा होता ही है, धर्म की रक्षा करने के लिये और व्यापक जीवन बनाने के लिये, व्यापकवाद राजा के राष्ट्र में होता है।

धर्म की पद्धति

आज मेरी प्यारी माता, जब यह विचार-विनिमय करती है कि मेरा पुत्र है, मानो देखो, यह पुत्र तेरा ही नहीं है, तेरे गर्भस्थल में आते ही राष्ट्रीय सम्पत्ति बन जाती है। राष्ट्रीय देन बन जाती है। हे माता! तेरा तो लालन-पालन करना, तेरा तो कर्त्तव्य हो जाता है। परन्तु आज तू उसे तेरा पूर्णत्त्व, उस पर अधिकार नहीं होता। हे माता! तू लोरी तो दे सकती है परन्तु उस बालक के प्राणों को नष्ट नहीं कर सकती, क्यों नहीं कर सकती, क्योंकि तेरा लालन-पालन करने में कर्त्तव्यवाद होता है, और नष्ट करने में तेरा धर्मज्ञ, तेरी धर्म की पद्धति नष्ट होती है। इसीलिये विचार-विनिमय करना है, क्योंकि हमें केवल रक्षा, कर्त्तव्यवाद में परणित होना है, बेटा! मैं इन वाक्यों में विलम्ब नहीं देना चाहता हूँ। केवल संक्षिप्त परिचय देने आया हूँ, क्या हे मेरी प्यारी माता! तेरे गर्भस्थल में तेरा बालक, तेरे जरायुज में पनप रहा है, परन्तु जब वह माता तेरे गर्भस्थल से पृथक् होता है, उसका नवीन कुटुम्ब बन जाता है, प्रबल बन जाता है, नाना सहपाठी बन जाते हैं, और नाना सम्बन्धी बन जाते हैं, परन्तु उसका जगत एक नवीन बन जाता है। यदि माता वह आचार्य कुल में जब चला जाता है अहा! वह कहता है कि उसका नवीन कुटुम्ब बन गया, नवीन कुटुम्ब बन जाता है। परन्तु आगे चल करके, वही ब्रह्मचारी, मुनिवरो! देखो, राष्ट्र का सूक्ष्म-सा कर्मचारी बन जाता है। तो वह राष्ट्र में सूक्ष्म-सा कर्म करने वाला और भी उसका व्यापक बन गया है। यदि वही माता का पुत्र है, धिराज बन जाता है। राजा बन जाता है तो बेटा! और व्यापक हृदय हो गया, राष्ट्र उसके लिये पुत्र के तुल्य हो जाता है, रक्षा करना उसका कर्त्तव्य हो जाता

है। धर्म की पद्धति को अपनाने के लिये तत्पर हो जाता है। मेरे प्यारे! जब मिथ्या को ऋषिवर मिथ्या स्वीकार नहीं करता, कर्त्तव्य में जा करके, परन्तु दार्शनिक द्वितीय राष्ट्र में जाता है, परन्तु द्वितीय राष्ट्रवेत्ता कहते हैं तुम्हारी सेना कहाँ रहती है, परन्तु राजा, उस समय अपनी प्रजा के यथार्थ के लिये, बेटा! रक्षा करने के लिये वहाँ यथार्थवाद का प्रतिपादन नहीं करता, वह कितनी व्यापकता उसके हृदय में ओत-प्रोत हो रही है। बेटा! वही ब्रह्मचारी, यदि बेटा! संन्यासी बन जाता है, तो उसका सर्वत्र ब्रह्माण्ड कुटुम्ब बन जाता है। बेटा! केवल वह एक राष्ट्र के विषय में नहीं, वह सूक्ष्म प्रजा के विषय में नहीं, वह परमात्मा की सर्वत्र सृष्टि का चिन्तन करता है, वह व्यापकता का चिन्तन करता है, बेटा! उसका जीवन उन्नत हो जाता है, वह उसका धर्म और मानवता, उसी में विराजमान है। इसी प्रकार बेटा! प्रत्येक मानव, प्रत्येक देव कन्या को अपने जीवन को उन्नत बनाना है, पवित्र बनाना है, व्यापकता को लाना है।

मानव जीवन का मुख्य लक्षण

यह है बेटा! आज का हमारा वाक्। अब मुझे समय मिलेगा, तो मैं शेष चर्चायें बेटा! कल प्रगट कर सकूँगा। आज के वाक्यों का अभिप्रायः यह क्या हम प्रभु का चिन्तन करते हुये, अपनी मानवता को विचार-विनिमय करते हुये, अपने जीवन को उन्नत बनाते चले जायें। अब मुझे समय मिलेगा, तो बेटा! शेष चर्चायें गुरु और शिष्य के सम्बन्ध में कल प्रगट कर सकूँगा। आज का वाक्य यह समाप्त होने गया, आज के वाक्यों का अभिप्रायः क्या है? धर्म, मानवता, राष्ट्रवाद, बेटा! देखो, और व्यापकता, मानव के जीवन का मुख्य लक्षण होता है, वैदिकता को अपनाने से मानव सुदृढ़ रहता है, यथार्थ उच्चारण करने में बेटा! अउन्नति को चला जाये, हानि हो जाये परन्तु अपने सत्यवाद को मानव को किसी काल में भी त्यागना नहीं चाहिये। जैसा महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज की चर्चा आती है, मैंने अभी-अभी उनके उल्लेखनीय विचार प्रगट किये। मुनिवरो! तपस्या प्रबल होती है, कल, मैं तप और ब्रह्मचर्य के सम्बन्ध में अपना विचार दे सकूँगा आज का वाक्य यह समाप्त होता गया।

आज के वाक्यों का अभिप्रायः यह कि धर्म और मानवता को उन्नत बनाना है, और परमात्मा को प्राप्त होने के लिये हमें मान अपमान से उपराम होना है। यह है बेटा! आज का वाक्य, अब समय मिलेगा, तो बेटा! शेष चर्चायें हम कल प्रगट करेंगे। आज का वाक्य यह समाप्त होता गया, अब वेद का पाठ होगा, इसके पश्चात् यह वार्त्ता समाप्त होने जा रही है।

महर्षि महानन्द जी–धन्य हो भगवन् गुरुदेव वाक्य तो बहुत सुन्दर! परन्तु समय बड़ा सूक्ष्म।

पूज्यपाद-गुरुदेव–हास्य चलो..., बेटा! कल समय मिलेगा तो अधिक चर्चायें कल प्रगट करेंगे। तो आज का वाक्य यह समाप्त होता गया, अब शेष चर्चायें कल प्रगट करेंगे और अब आज का वेदपाठ होगा।

ओ३म् ब्रह्म भषवता माणं आ पां चमा रभथ सा रणा मा णाहाम्।

ओ३म् ग्राहणं दधि गृहिताहं मनो प्रागणं देवं भागा वाचन्नमा दधि ऋषि आ पाञ्चमा देवं भगाहानि।

ओ३म् व्रा गृवन्धना प्राची रथाः आ भा ब्रह्मणा गायन्त्रा मनुज प्रा वसौ देवं आभाहाम्।

ओ३म् बह्म गायन्त्रा मनी प्रजा देवं दधिमा सवां भद्राः।

महर्षि महानन्द मुनि जी–अच्छा भगवन्!

पूज्यपाद-गुरुदेव–आनन्दित रहो!

दिनाँक : 14 सितम्बर, 1969

॥ ओ३म् ॥

यज्ञ से आत्म-ज्ञान

मेरे प्यारे! जो अशुद्ध परमाणुवाद है वह मानव का गृह, मानव का जो यह बाह्य जगत् है यह याग से ऊँचा बन जाता है। एक समय माता शकुन्तका और शकुन्तका के पति विरेहणात ऋषि महाराज दोनों वेदों का अध्ययन करते-करते उनके हृदय में यह पिपासा जागरूक हुई कि हमें अपने गृह और वंश को ऊँचा बनाने के लिए एक पुत्र की उत्पत्ति होनी चाहिए। दोनों के हृदय में जब यह आकाँक्षा जागरूक हुई, उनका समावेष हुआ, वेदों का पठन-पाठन प्रारम्भ हुआ। प्रत्येक माह में माता भिन्न-भिन्न प्रकार का याग करती रहती। दोनों पति-पत्नी याग करने लगे और उनके हृदय की यह आकाँक्षा रहती कि हमारा जीव ऊँचा बने। शकुन्तका के गर्भ-स्थल से पुत्र का जन्म हुआ। **उस पुत्र का नाम महर्षि सुकेता था।** सुकेता मुनि को माता शकुन्तका लोरियों का पान करा रही है और माता यह कह रही है कि पुत्र तेरा हृदय ऊँचा होना चाहिए। हे बालक! तुम्हें सत्यता के आधार से जन्म लिया है और सत् ही तेरा जीवन होना चाहिए। माता अपने पुत्र सुकेता को अपनी लोरियों में ब्रह्मचर्य का उपदेश दे रही है। हे बालक! तू सँसार का वैज्ञानिक भी बन। मानो माता की प्रेरणा कार्य कर रही है, माता उसके समक्ष द्वितीय शब्द नहीं आने देती। वह मन और प्राण का एकाग्र करती हुई बालक को सुशिक्षित बना रही है। जब वह चार वर्ष का ब्रह्मचारी हुआ उस समय माता शकुन्तका कहती है कि **हे! बालक मानव का आभूषण क्या है?** तो चार वर्ष का ब्रह्मचारी उत्तर देता है कि माँ! **मानव का जो भूषण है वह मानव का ज्ञान है, मानव का ब्रह्मचर्य है।** माता ने कहा कि हे बालक! ''आनन्दम् विरेह बिछोनोभरी।'' मानो इस शरीर में ओढ़ना क्या है? और बिछौना क्या है और वह किसका बिछौना है? तो वह बालक कहता है कि माँ ! मेरे हृदय के उन्नाद का बिछौना जल है, सोम है और इस अन्न का

ओढ़ना भी सोम और जल ही माना जाता है। चार वर्ष का बालक माँ को यह उत्तर दे रहा है। वह माता कितनी सौभाग्यशालिनी है जिनके गर्भ से ऋषि पुत्रों का जन्म होता है। उस माता का जीवन कितना भाग्यशाली है।

मेरे प्यारे! जब माता शकुन्तका अपने बालक से प्रश्न कर रही थी तो माता ममता में अपने हृदय से यह पुकार रही थी कि बालक तेरा जीवन ऊध्र्वगति में रहना चाहिए। माता याग कर रही है, वह बालक भी विराजमान है। उस समय बालक से यह कहती है कि **हे बालक! इस याग का देवता कौन है?** उस समय कहा कि याग का देवता 'सत्य' है। उन्होंने कहा कि याग का देवता कौन है? बालक कहता है कि माता यज्ञ का देवता सूर्य है, जो साम-गान गा रहा है। उस समय कहा कि बालक यज्ञ का देवता कौन है? 'यज्ञं ब्रह्मे कृताः' यज्ञ का देवता मानो यह अग्नि है। क्योंकि अग्नि ही वृष्टि करने वाला यह सूर्यवत कहलाया जाता है। इसी प्रकार उन्होंने प्रश्न किया कि **हे बालक! यह समिधा क्या है?** उन्होंने कहा कि समिधा अपने को भस्म करती हुई सँसार को अपनी आभा प्रदान करती है। जब यह उत्तर दिया तो उन्होंने कहा कि **अग्नि का देवता कौन है?** उन्होंने कहा कि अग्नि का देवता ब्राह्मण है, ब्रह्मा है जो उद्गान गा रहा है, उद्गान गाता हुआ वातावरण को शोधन कर रहा है, यज्ञशाला के वातावरण को वेदों से पवित्र बना रहा है। वही तो याग हैं। क्योंकि याग परमपिता परमात्मा कर रहा है। परमात्मा का याग, अरबों वर्षों से सूर्य चला आ रहा है, याग हो रहा है। अग्नि अपनी आभा में रमण करती हुई प्रकाश दे रही है। प्रकाश देती हुई सँसार को प्रकाशयुक्त बना रही है। आज हम उस अग्नि को यज्ञ का देवता स्वीकार करते हैं।

हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए हम सँसार के प्रत्येक कार्य को याग जानें। हे माता! तू गर्भ-स्थल से महर्षि सुकेता जैसे ब्रह्मचारी को जब जन्म देती है तो तू कितना सुन्दर याग कर रही है? माँ! तेरा हृदय जब वेद की पताका को लेकर के चलता है तो तेरा हृदय पवित्रता को प्राप्त होता रहता है। माँ! तेरे हृदय की विकृतता विचित्र होनी चाहिए।

जिससे यह जीवन सुन्दरतम को प्राप्त होता रहे। मेरे प्यारे ! जब महर्षि सुकेता ने, आदि ऋषियों ने यह निर्णय दिया तो निर्णय की आभा को रमण करने वाला जीवन की आभा में आभायित होता हुआ जीवन को एक महत्ता में परणित करने वाला वेद का ऋषि अपने मन्तव्य की वार्ता प्रकट कर रहा है। **हम यह कहा करते हैं कि ऋषि मुनियों ने सबसे ऊँचा याग को माना है।** याग की प्रतिष्ठा देवताओं ने प्रतिष्ठित मानी है। इसीलिये प्रत्येक मानव, प्रत्येक देव-कन्या को सँसार में याग करना चाहिए। मैंने अपने पुत्र को बहुत समय वर्णन कराते हुए कहा था कि हमारे यहाँ राजा-प्रजाओं के यहाँ यागों का प्रचलन परम्परा से रहा है और वह जो चलन है वह ऊर्ध्व गति को प्राप्त होता हुआ मनुष्यता को प्राप्त होता हुआ, आभा में रमण करता हुआ, अपनी आभा से युक्त होता हुआ जीवन को सुन्दर बनाता रहता है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेद मन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को निरन्तर प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है–

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.) PAN No. – AAAAV7866J
पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली
बैंक खाता नं. 0149000100229389, IFS Code - PUNB 0014900

शृङ्गीऋषि वेबसाईट

Website : www.shringirishi.in
Email : contact@shringirishi.in

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. तीन प्रकार के सौर मण्डल कहलाये गये हैं। प्रथम सौर मण्डल का अधिपति सूर्य कहलाया गया है।
2. द्वितीय सौर मण्डल का अधिपति बृहस्पति कहलाया गया है।
3. तृतीय सौर मण्डल का अधिपति ध्रुव कहलाया गया है।
4. राष्ट्र का जो प्राण है, राष्ट्र में वह सदाचार है।
5. राष्ट्र का जो प्राण है, वह एक-दूसरे की रक्षा कहलाता है।
6. गरुड़ नाम ज्ञान और विज्ञान की प्रतिभा को कहा जाता है।
7. गरुड़ विष्णु के यहाँ बहुत बड़े महान् वैज्ञानिक को कहा गया है।
8. पुरोहित भी एक प्रकार का अन्न कहलाया गया है।
9. पुरोहित तो संसार में परमपिता परमात्मा को ही कहा जाता है।
10. जितने दमनशील रहेंगे उतना ही ये संसार धर्म और मर्यादा को प्राप्त होता रहेगा।
11. जो मानव दान देता है, उज्ज्वल कार्य करता है वह मानव मननशीलता में चला जाता है।
12. जब तक दयावान नहीं बनेंगे तब वह प्रजापति की सन्तान नहीं कहलायेंगे।
13. परमपिता परमात्मा का यह जगत हृदय माना गया है, इसी प्रकार मानव का जो हृदय वह प्रजापति माना गया है।
14. आज हमें अपने हृदय को स्वच्छ और पवित्र बनाना है।
15. एक गृह है, वह जब पवित्र बनता है तो विचारों से बनता है।
16. कर्त्तव्य किसे कहते हैं? एक-दूसरे को मानव ऋणी नहीं बनाना चाहिये।
17. मोह-ममता तो मानव का, अज्ञान का सूचक है।
18. आत्मा कदापि नष्ट नहीं होता।
19. जहाँ कर्त्तव्य का भाव आता है, कर्त्तव्य की वेदना आती है वहाँ मानव को ममता नहीं रहती।

।। ओ३म् ।।

जन्मदिन की शुभकामनाएँ

चिरन्जीव अधिराज अपने माता-पिता के साथ

श्रीमति सीमा त्यागी धर्मपत्नी श्री अशोक त्यागी, निवासी स्याना, जिला बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश ने अपने प्रिय सुपौत्र चिरन्जीव अधिराज के जन्मदिन की पावन वेला के शुभ आगमन पर अत्यन्त श्रद्धा एवम् उदारता से 2101 रु. का सात्त्विक सहयोग समिति के प्रकाशन कार्य को ऊर्ध्वागति प्रदान करने के लिए समर्पित किया है, जिसका समिति हृदय से आभार व्यक्त करती है।

पूज्यपाद गुरुदेव का सानिध्य श्रीमति सीमा त्यागी जी को उनकी बहन (बुआजी की सुपुत्री) आदरणीय श्रीमति सुधा त्यागी, दिव्या श्री राजपाल त्यागी, पञ्चशील, मेरठ में उनके गृह पर वेद ब्रह्म पारायण यागों के शुभ अवसर पर मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। गुरुदेव के साधारण जीवन और योग मुद्रा में प्रसारित वैदिक ज्ञान गङ्गा की अथाह प्रकाष्ठा से प्रभावित होकर साहित्य को अध्ययन करने की तीव्र जिज्ञासा को तृप्त करते हुये उनके आश्रम व यज्ञों के कार्यों में अत्यन्त उदारता से निरन्तर सहयोग करने का क्रम अभी तक चला आ रहा है, और उस ज्ञान से अपने परिवार को भी ओत-प्रोत करने में प्रयत्नशील है। श्री अशोक त्यागी जी स्याना में अपने व्यापार व बागों सम्बन्धी कृषि कार्य में अत्यन्त व्यस्त रहते हुये भी सामाजिक व आध्यात्मिक कार्यों को अपने सुपुत्र श्री आदित्य त्यागी के सङ्ग अग्रणीय बनाने में संलग्न रहते हैं। इसी धारा को निरन्तर गतिमान बनाये रखने के लिये अपने सुपौत्र के जन्मदिन पर जन-कल्याण के लिये समिति को प्रकाशन कार्य में अपनी आहुति प्रदान की है।

समिति प्रिय अधिराज के जन्मदिन पर हृदय से बारम्बार शुभकामनाएँ प्रदान करती है और समस्त परिवार के लिये सुख, शान्ति, दीर्घायु व सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

।। ओ३म् ।।

नामकरण संस्कार

चिरन्जीव सत्यकाम अपने माता-पिता एवम् बहन के साथ

श्री राजपाल त्यागी जी निवासी पञ्चशील, गढ़ रोड़ मेरठ, उत्तर प्रदेश ने अपने सुपौत्र चिरन्जीव प्रिय सत्यकाम के नामकरण संस्कार के शुभ अवसर पर स्वस्ति याग का आयोजन कराया और पूज्यपाद गुरुदेव के श्रीचरणों में सुमन स्वरूप 5101 रु. का अनुदान समिति के प्रकाशन कार्य को आहुति रूप में समर्पित किया है। जिसके लिये समिति हृदय से आभार व्यक्त करती है।

श्री त्यागी जी पूज्यपाद गुरुदेव के द्वारा प्रति वर्ष वेद पारायण याग का आयोजन अपने गृह पर कराने की परम्परा को निरन्तर प्रकाशमान बनाये हुये हैं। और नित्य दैनिक याग के माध्यम से अपने परिवार को भी सम्पन्न बनाने में प्रयत्नशील हैं। अपने सांसारिक कर्त्तव्यों का निर्वाह करते हुये गाँधी धाम समिति, लाक्षागृह, वारणावत के अन्तर्गत विद्यालय, गौशाला व कृषि इत्यादि कार्य में भी पूर्ण निष्ठा से अपने दायित्वों का, मन्त्री पद पर लम्बे समय से सुशोभित रहते हुये, अपने जीवन को ऊर्ध्वागति प्रदान करने में संलग्न हैं। वैदिक परम्परा को अपने जीवन में साकार रूप बनाये रखने के लिये उनके सुपुत्र श्री सुकेता त्यागी व उनकी पुत्र वधु सौभाग्यशालिनी श्रीमति सुरभि ने विशेष रूप से दुबई से आकर अपने प्रिय सुपुत्र का नामोकरण संस्कार स्वस्ति याग के माध्यम से वैदिक परम्परा से सम्पन्न कराया है।

वैदिक सम्पदा से सम्पन्न याज्ञिक परिवार को सुपौत्र चिरन्जीव सत्यकाम को नामकरण की समिति बारम्बार शुभकामनाएँ प्रदान करती है और समस्त परिवार के लिये सुख, शान्ति, दीर्घायु व सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

विशेष सूचना

वैदिक अनुसन्धान समिति की साधारण-सभा का आयोजन

वैदिक अनुसन्धान समिति के सभी आजीवन सदस्यों को एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि समिति की **साधारण सभा दिनाँक 28 अगस्त 2022,** दिन रविवार को **आर्य समाज मन्दिर, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017** में प्रातः 11.00 बजे आयोजित की जा रही है। सभी आजीवन सदस्य समय पर आकर भाग लेने का कष्ट करें।

सभा में विचारणीय विषय हैं–

1. पिछली साधारण सभा की कार्यवाही की पुष्टि।
2. पिछले वर्ष के आय-व्यय की समीक्षा और पुष्टि और नये वर्ष अनुमानित आय-व्यय पर विचार।
3. साहित्य व समिति के अधिनियम इत्यादि सम्बन्धित सभी विषयों पर विस्तार से विचार-विनिमय।
4. अन्य विचार-विनिमय सभापति की अनुमति से।

विशेष–सभा की कार्यवाही प्रातः 11.00 बजे प्रारम्भ होगी। यदि कोरम पूरा नहीं हुआ तब सभा आधे घण्टे के लिए स्थगित की जायेगी और पुनः उसी स्थान और तिथि पर उसी एजेन्डा के साथ प्रातः 11.30 बजे पुनः से प्रारम्भ हो जायेगी।

मन्त्री
वैदिक अनसुन्धान समिति (पञ्जी.)

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	110.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	110.00
*3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	120.00
*4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	120.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	160.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	100.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	40.00
8.	आत्म-लोक	45.00
*9.	धर्म का मर्म	50.00
10.	शंका-निवारण	40.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्त्व	50.00
12.	आत्मा व योग-साधना	40.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	150.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	150.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	140.00
17.	रामायण के रहस्य	50.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	50.00
19.	महाभारत के रहस्य	35.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	45.00
21.	रावण-इतिहास	65.00
22.	महाराजा-रघु का याग	35.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	40.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	40.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	50.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	40.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	45.00
28.	अश्वमेध-याग और चन्द्रसूक्त	50.00
29.	याग-मन्जूषा	45.00
30.	आत्म-दर्शन	35.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	40.00
32.	याग और तपस्या	70.00
33.	यागमयी-साधना	45.00
34.	यागमयी-सृष्टि	40.00
35.	याग-चयन	50.00
36.	दिव्य-रामकथा	150.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	50.00
38.	दिव्य-ज्ञान	45.00
39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	140.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	55.00
41.	आत्म-उत्थान	45.00
*42.	तप का महत्त्व	50.00
43.	अध्यात्मवाद	45.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	45.00
45.	वैदिक-प्रभा	40.00
46.	प्रकाश की ओर	40.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	45.00
48.	वैदिक-विज्ञान	40.00
49.	धर्म से जीवन	40.00
50.	आत्मा का भोजन	45.00
51.	साधना	40.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	45.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	45.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	110.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	50.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	110.00
57.	माता मदालसा	60.00
*58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	110.00
*59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	110.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	160.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	110.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	150.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	110.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएँ	60.00
65.	प्रभु-दर्शन	60.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	110.00
*67.	समाज उत्थान का मार्ग	60.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	110.00
*69.	ब्रह्म की ओर	60.00
*70.	ईश्वर मिलन	60.00
*71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	110.00
*72.	यौगिक प्रवचन माला भाग-16	110.00
*73.	नैतिक शिक्षा	60.00
*74.	यौगिक प्रवचन माला भाग-17	110.00
*75.	आत्मिक ज्ञान	60.00
*76.	यौगिक प्रवचन माला भाग-18	120.00
*77.	यज्ञ विज्ञान	100.00
*78.	यौगिक प्रवचन माला भाग-19	120.00
79.	मानव दर्शन	150.00
80.	यौगिक प्रवचन माला भाग-20	160.00
	पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज एवम् कर्मभूमि लाक्षागृह	10.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, पेनड्राइव के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध है–

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला–बागपत, (उ.प्र.)। मोबाइल नं. 09897695391
2. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294, मोबाइल नं. 9810887207
3. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, डी-33 पञ्चशील एन्क्लेव नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
4. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
5. श्री अनिल त्यागी सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)।
6. श्री आशीष त्यागी, सुपुत्र श्री सुशील त्यागी डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। फोन नं. 0120-4202763, मो. नं. 9818079943
7. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)। मोबाइल नं. 09412888050
8. आचार्य अरविन्द कुमार शास्त्री, मं.न. 209 ग्रीन हाईटस A to Z रूड़की रोड़, मोदीपुरम्, मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09411823200
9. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पँचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
10. श्री शमीक त्यागी, 16ए, आलोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड़, (उ.प्र.)।
11. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मोबाइल नं. 09910589486
12. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110–मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9899228860, 9871367937
13. श्री पवन त्यागी सुपुत्र श्री राजाराम त्यागी, मौ. खड़खड़ियान, माता, ग्राम खरखौदा, जिला मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 7536097171
14. श्री प्रदीप त्यागी सुपुत्र श्री महेश त्यागी, रघुनिवास 138 सर्वोदय कालोनी, मेरठ रोड़, हापुड़ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9758330473
15. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे. पी. नगर (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09412139333
16. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
17. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

मासिक सहयोग

सु. कुमारी नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली– स्मृति–श्रीमति शान्ति अबरोल व श्री देवराज अबरोल	1001 रुपये
श्रीमति रेणु तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली– स्मृति–श्री रत्न तुली	1001 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री ज्ञानेश द्विवेदी	1000 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	501 रुपये
श्री कर्ण तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्रीमती रुचिका तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्री अरुण तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्रीमती सुखमणी तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्रीमती सुमन त्यागी, मुम्बई	501 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
मास्टर कवन्धि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज, दिल्ली	101 रुपये
कुमारी अञ्जलि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सात्विक त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज, दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये
कुमारी प्रीक्षा त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये

मासिक सहयोग का आह्वान

आप सभी से समिति विनम्र भाव से प्रार्थना करती है कि मासिक सहयोग की राशि समय पर प्रेषित करने का सहयोग करें जिससे प्रकाशन निरन्तर ऊर्ध्वागति को प्राप्त होता रहें। **वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद-गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए इस अन्तरात्मा को जानने का प्रयास करें। हम आत्मवेत्ता बन करके अपनी मानवीय धारा में ऊँचा बन जाएँ। यह न सूर्य है, न चन्द्रमा है, न तारामण्डल है, न अग्नि है, न शब्द है। भगवन्! प्रकाश के देने वाला आत्मा है। आत्मा के कारण ही मानव का शरीर क्रियाशील बना रहता है। तो इसीलिए प्रत्येक मानव को आत्मा को जानना चाहिए। आत्मवेत्ता बनने के लिए आत्मचेतना में ही रत्त रहना चाहिए। क्योंकि जो हमारे शरीरों में भास रहा है, प्रकाशक बना हुआ है, उस प्रकाश को जानने के प्रकाश से प्रकाशित होना चाहिए। यह कैसा अद्‌भुत जगत है इसके ऊपर विचारना है, बहुत गम्भीरता से मनन करना है। क्योंकि मनन करने वाला यह ब्रह्माण्ड है, प्रभु की जो रचना है वह बड़ी अद्‌भुत है। इसीलिए प्रभु का गुणगान गाना हमारे लिए अनिवार्य है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 50 : अंक : 590
अगस्त 2022

मूल्यः
पन्द्रह रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R.No. DL (S)-20/3220/2021-2023
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2022-2023
Customer I.D. – 3000019591
POSTED AT KRISHNA NAGAR HP.O. N.D. ON 10/11-8-2022
Published on 5th day of the same month

वर्ष 50 : अंक : 590
अगस्त 2022

मूल्यः
पन्द्रह रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R.No. DL (S)-20/3220/2021-2023
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2022-2023
Customer I.D. – 3000019591
POSTED AT KRISHNA NAGAR HP.O. N.D. ON 10/11-8-2022
Published on 5th day of the same month